Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

• नई दिल्ली • वर्ष 23 • अंक 11 • 20 - 26 दिसंबर, 2021 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 18-12-2021 • पेज : 12 • ₹ 10

अर्हत उवाच

ण य संखयमाहु जीवियं,
तह वि य बालजणो पगब्भई।

टूटे हुए जीवन-सूत्र को जोड़ा नहीं जा सकता। फिर भी अज्ञ मनुष्य हिंसा आदि में धृष्ट होता है।

समझ शक्ति और सहन शक्ति के संयोग से व्यक्ति सुखी रह सकता है : आचार्यश्री महाश्रमण

बाबेई, १० दिसंबर, २०२१

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी १६ किलोमीटर का विहार कर बाबई के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय पधारे। ग्रामवासियों ने आचार्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया।

दैनिक प्रवचन में जैन जगत के उज्ज्वलतम नक्षत्र आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि ज्ञान का बड़ा महत्त्व है। ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास कितने-कितने लोग अपने-अपने ढंग से करते हैं। गाँव-गाँव में जगह-जगह विद्यालय मिलते हैं। हमारा प्रवास भी यात्रा में प्रायः विद्या संस्थानों में हो रहा है।

विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालयों में विद्यार्थी पढ़ते हैं। ज्ञान-प्राप्ति का प्रयास किया जाता है। अध्ययन करने में परिश्रम-समय लगाया जाता है। अध्ययन करने से पहला लाभ है, आदमी को ज्ञान प्राप्त होता है। ज्ञान प्राप्ति का लक्ष्य भी हो और परिश्रम हो तभी ज्ञान मिल सकता है।

विद्यालय में विभिन्न विषय अध्यापकों द्वारा पढ़ाए जाते हैं। विषयों की उपयोगिता भी होती है। परंतु ज्ञान के साथ अच्छे संस्कार वाली बात भी जुड़ी रहनी चाहिए। शिक्षा प्रणाली में अनेक विषयों के साथ संस्कार उपार्जन वाली बात भी हो। किसी देश-समाज का भविष्य तभी अच्छा हो सकेगा या होने की आशा की जा सकती है, जब विद्यार्थी अच्छी शिक्षा और संस्कारों का अर्जन करें।

बच्चे के सामने एक लंबा भविष्य होता है, उसमें अच्छी विद्या, अच्छे संस्कार दिए जाएँ तो समाज-राष्ट्र आगे जाकर अच्छा हो सकता है। आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ जी द्वारा प्रदत्त एक विषय है–जीवन-विज्ञान। जीने की कला, जीने का विज्ञान है, जीवन विज्ञान। बच्चों में नैतिकता, ईमानदारी, नशामुक्ति, विनम्रता के संस्कार हों। प्रयास करने से कुछ फल मिल सकता है।

केवल ज्ञान ही नहीं साथ में अच्छे संस्कार, अच्छा आचरण भी हो। केवल ज्ञान अधूरा है। विद्यार्थियों में भावात्मक विकास भी हो। शारीरिक, मानसिक विकास भी आवश्यक है। आई क्यू के साथ ई क्यू का भी विकास हो।

जिसके पास बुद्धि का बल नहीं है, उसमें एक कमजोरी है। समझ शक्ति के साथ सहन शक्ति भी बढ़े। तभी आदमी सुखी रह सकता है। विद्यार्थी में भावात्मक विकास ऐसा हो कि वह सहन भी कर सके। जिसमें भावात्मक विकास नहीं है, वह आदमी परिवार, समाज, राष्ट्र के लिए मुसीबत बन सकता है। उसमें गलत आदतें पड़ सकती हैं। यह एक प्रसंग से समझाया कि बच्चे में प्रारंभ में ही अच्छे संस्कार न दिए जाएँ तो समस्या हो सकती है।

एक प्रसंग से और समझाया कि अच्छे संस्कार देने वाले अभिभावक अपनी संतान को सन्मार्ग पर ला सकते हैं। ये संस्कारों की बात है। घर में, स्कूल में भी अच्छे संस्कार मिले। साधु-संतों से भी अच्छे संस्कार मिलते हैं।

भारत में कितने-कितने ग्रंथ हैं, उनमें अच्छे संस्कार भरे पड़े हैं। जब त्यागी संतों का समागम होता है, उनकी कल्याणी वाणी से अच्छी प्रेरणा मिल सकती है। संस्कार युक्त विद्या का विद्यालयों, महाविद्यालयों में प्रयास होता रहे तो अच्छे परिवार, समाज, राष्ट्र का निर्माण हो सकता है।

हम इस अहिंसा यात्रा में तीन बातों का प्रचार कर रहे हैं–सद्भावना, ईमानदारी व नशामुक्ति। तीनों संकल्पों को समझाकर स्थानीय लोगों व विद्यार्थियों को स्वीकार करवाए। जैन परिवारों की संभाल की।

पूज्यप्रवर के स्वागत में बाबेई श्री संघ से सौभागमल ने अपनी भावभरी अभिव्यक्ति देते हुए कहा कि पूज्यप्रवर के पधारने से ये धरा धन्य हो गई है। आचार्यप्रवर के तीन संकल्पों का हम दृढ़ता से पालन करें। संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

जीवन में सद्भावना, मैत्री भाव रखें : आचार्यश्री महाश्रमण

सवाईमाधोपुर, १२ दिसंबर, २०२१

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी अपनी अहिंसा यात्रा एवं धवल सेना के साथ सवाईमाधोपुर पधारे। सवाईमाधोपुर ऐसी पावन स्थली है कि यहाँ पर हमारे आद्यप्रवर्तक आचार्यश्री भिक्षु ने दो चातुर्मास किए थे। यहाँ से अनेक भव्य आत्माएँ तेरापंथ धर्मसंघ में दीक्षित हुई हैं।

परम पावन ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि तुम समय को जानो। हमारे जीवन में समय का बहुत महत्त्व है। हमारे हर कार्य में समय होता है, तो कार्य हो सकता है। समय तो और प्राणियों को भी मिलता है, पर मानव जीवन में जो समय मिल रहा है, यह बहुत महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि ८४ लाख योनियाँ बताई गई हैं, उसमें यह मानव का जीवन विशेष महत्त्वपूर्ण होता है। इसलिए हमें यह ध्यान देना चाहिए कि मैं इस मानव जीवन में उपलब्धमान समय का बढ़िया उपयोग करूँ।

चार प्रकार की आत्माएँ होती हैं–परमात्मा, महात्मा, सदात्मा और दुरात्मा। परमात्मा तो परम है, वे हमारे लिए अदृश्य है। हम मनुष्यों में तीन प्रकार के आदमी हो सकते हैं–महात्मा, सदात्मा, दुरात्मा। साधु लोग हैं, वे तो महात्मा हैं, पर साधु हर कोई बन जाए यह तो असंभव या कठिन बात है। महात्मा के तो मन, वचन, काय में एकरूपता होती है या होनी चाहिए। मन में कुछ है, वाणी में कुछ है वह दुरात्मा है, जो छलकपट करता है।

साधु-महात्मा के दर्शन करने से ही पाप झड़ जाते हैं। साधु के तो दर्शन ही पुण्य हैं, क्योंकि साधु तो चलते-फिरते तीर्थ होते हैं। साधुओं की संगति का भी बड़ा महत्त्व होता है। शुद्ध साधु की संगति मिलनी भी दुर्लभ है, धर्म कथा होना भी दुर्लभ है, वो हो तो उसका लाभ उठाना चाहिए। जितना समय मिले, लाभ उठाने का प्रयास करना चाहिए। साधु में संयम है, त्याग है, इसलिए उसकी विशेषता है।

साधु तो अध्यात्म-धर्म के मार्ग पर अग्रसर है। जो धर्म के मार्ग पर चलता है उसे तो देवता भी नमस्कार करते हैं। देवों का अपना महात्मय है। उनकी असातना न हो। तपस्वी साधु की सेवा में देव आ जाते हैं। जो गृहस्थ है, गृहस्वामी जीवन में भी अच्छा जीवन जीना चाहिए। गृहस्थों में भी कई-कई तो साधु जैसे होते हैं।

गृहस्थ जीवन को सफल बनाने के लिए जीवन में ईमानदारी रहे। उसकी ओर से धोखा नहीं देना चाहिए। झूठ एवं चोरी से बचें। जीवन में सद्भावना, मैत्री भाव रखें। भिन्नता-मान्यता अलग हो सकते हैं, पर व्यवहार में मैत्री भाव रखना चाहिए। जीवन में संयम है, नशे से बचने का प्रयास करना चाहिए। नशे से चित्त भ्रांत हो सकता है, आदमी अपराध में जा सकता है और दुर्गति को प्राप्त कर सकता है। नशामुक्त जीवन हो। संयम-अहिंसा, सादगी जीवन में रहे।

आदमी के विचार, आचार, संस्कार अच्छे हों। अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम जीवन में आएँ। प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान से जीवन में एकाग्रता-शांति एवं विद्यार्थियों में अच्छे संस्कार आ सकते हैं। 'इंसान पहले इंसान, फिर हिंदु या मुसलमान'। अच्छा मानव बनने का व इसको सार्थक, सुफल बनाने का प्रयास करें। जीवन के बाद भी हमारी आत्मा रहती है। आगे का भी ध्यान दें, इसके लिए वर्तमान पर ध्यान देकर अच्छा बनाएँ। (शेष पृष्ठ ३ पर)

✦ *वे व्यक्ति महान माने जाते हैं, जो दूसरों की समस्या को समाहित करते हैं। ऐसे लोग परोपकारपरायण होते हैं।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

भीतर की शांति प्राप्त करने के लिए करें आध्यात्मिक आराधना : आचार्यश्री महाश्रमण

रवांजना, ११ दिसंबर, २०२१

सद्भावना, नशामुक्ति और नैतिकता की मशाल जलाने की प्रेरणा प्रदान करने वाली अहिंसा यात्रा बूंदी जिले से सवाईमाधोपुर में प्रवेश हुई। आचार्यश्री महाश्रमण जी १४ किलोमीटर का विहार कर राजकीय माध्यमिक विद्यालय रवांजना पधारे।

मुख्य प्रवचन में तेरापंथ धर्मसंघ के अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि धार्मिक साहित्य में मोक्ष की बात आती है। एक दार्शनिक विषय है—आत्मा और आत्मा से जुड़ा हुआ कर्म और फिर मोक्ष। आत्मा, कर्म और मोक्ष का संबंध हो जाता है।

आत्मा या प्राणी जो भी क्रिया करता है, उससे कर्म का बंध होता है। फिर तपस्या-साधना के द्वारा बंधन को तोड़ दिया जाता है, तो आत्मा स्व-स्वरूप में अवस्थित हो जाती है। समस्त कर्मों से मुक्त बन जाती है, वह अवस्था मोक्ष होती है। जीवन का अंतिम लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति या मोक्ष प्राप्ति की दिशा में आगे बढ़ना होना चाहिए।

आदमी जन्म लेता है, जीवन जीता है और एक दिन मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। मानव जीवन में मोक्ष प्राप्ति का कार्य करना एक विशेष उपलब्धि का काम हो जाता है। आत्मा को शाश्वत कहा गया है। शरीर अशाश्वत होता है। इस

अशाश्वत शरीर के द्वारा हम शाश्वत आत्मा के स्वरूप को पाने की चेष्टा करें, यह लाभ हो सकता है। मोक्ष एक अंतिम लक्ष्य है।

विद्या के लिए कहा गया है कि विद्या वह होती है, जो मुक्ति लाने वाली होती है। आदमी कषायों से मुक्ति पाने का प्रयास करे। विद्यार्थियों में अच्छे संस्कार आएँ तो विद्यार्थी अच्छा इंसान बन सकता है। अच्छा इंसान बनने से अच्छा समाज, राष्ट्र और विश्व बन सकता है। हमारे जीवन में बुराईयाँ न रहें, यह प्रयास हो।

हम जैन धर्म से हैं। अहिंसा यात्रा करते-करते सवाईमाधोपुर के निकट आ गए हैं। हम इस यात्रा में तीन बातों का प्रसार कर रहे हैं—सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति। हमें बुद्धि मिली है, उसका अच्छा उपयोग हो। यह एक प्रसंग से समझाया कि सब नकली काम होता है, तो फिर असली काम कब होगा।

भारत में कितना ज्ञान है। कितने ग्रंथ, संत और पंथ हैं। यह भारत की एक संपदा है। अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम जीवन में आ जाएँ तो जीवन अच्छा हो सकता है। प्रेक्षाध्यान एवं जीवन विज्ञान भावात्मक परिवर्तन लाने वाले हो सकते हैं। अध्यात्म के द्वारा शांति रहती है। कषाय कम पड़ने से शांति मिल सकती है। शांति हमारे भीतर ही है। बाहरी साधनों से मात्र सुविधा मिल सकती है।

कामना ज्यादा हो तो आदमी दुःखी बन सकता है। कामना को कम कर दें। शांति भीतर खोजें। हम शांति को पाने के लिए साधना करें। आध्यात्मिक आराधना करें तो भीतर की शांति मिल सकती है। पूज्यप्रवर ने अहिंसा यात्रा के तीनों संकल्पों को समझाकर स्थानीय लोगों को स्वीकार करवाए।

मुनि कुमार श्रमण जी ने पूज्यप्रवर की अहिंसा यात्रा के बारे में विस्तार से समझाया। संत जहाँ जाते हैं, गंगा स्वयं वहाँ आ जाती है। जैन साधु की दिनचर्या के बारे में समझाया। संत, नदी, पेड़ और सूरज किसी एक जाति-धर्म के लिए नहीं होते, सबके लिए होते हैं। अच्छी बात किसी भी धर्म से स्वीकार की जा सकती है।

पूर्व विधायक मोतीलाल मीणा, जिला उप-प्रमुख बाबूलाल मीणा, सवाईमाधोपुर चेयरमैन विमल महावत ने पूज्यप्रवर की अभिवंदना में अपने भाव अभिव्यक्त किए। कैलाश मीणा ने भी भावना व्यक्त की। रवांजना जैन समाज से सुरेश जैन ने भाव व्यक्त किए।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि जो धर्म की रक्षा करता है, उसकी धर्म रक्षा करता है। धर्म की कला सबसे बड़ी कला है।

त्यागी संत राजाओं का राजा होता है : आचार्यश्री महाश्रमण

देईखेड़ा, ७ दिसंबर, २०२१

अहिंसा यात्रा प्रणेता, मानवता के महासूर्य, जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी ३ देश, २० राज्य और लगभग १८००० किलोमीटर से अधिक की पदयात्रा के संकल्पों के साथ गतिमान है। आचार्यप्रवर अपनी धवल सेना के साथ मंगलवार को देईखेड़ा पर अपनी करुणा बरसाते हुए लोगों को गृहस्थ जीवन को धर्ममय बनाने के सूत्रों की प्रेरणा प्रदान करने के साथ ही अहिंसा यात्रा की संकल्पत्रयी से भावित कर उन्हें सन्मार्ग पर चलने को अभिप्रेरित भी किया।

आचार्यश्री महाश्रमण जी ने कापरेन स्टेशन से मंगल प्रस्थान किया। वर्तमान में राजस्थान का बूंदी जिला श्रीचरणों से पावन हो रहा है। मार्ग में आने वाले ग्रामीण जनों व विभिन्न वाहनों से अन्यत्र जाने वाले लोगों ने आचार्यश्री के दर्शन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। लगभग चौदह किलोमीटर का विहार कर आचार्यश्री देईखेड़ा के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में पधारे तो विद्यालय के शिक्षकों आदि ने आचार्यश्री का भावभीना स्वागत किया।

पूज्यप्रवर ने अमृत देशना प्रदान करते हुए गृहस्थ जीवन को सुखी बनाने के सात सूत्र एवं गृहस्थ जीवन की उपयोगिता बताई।

गृहस्थ जीवन के सुखी बनाने के प्रथम सूत्र के रूप में बताया कि गृहस्थ को सुपात्र दान देना चाहिए। और भी दान देना चाहिए। दूसरी बात—गुरु के प्रति विनय का भाव रखें। तीसरी—सर्वसत्वानुकंपा—सब प्राणियों के प्रति दया की भावना रखनी चाहिए।

चौथी बात है—न्यायपूर्ण बर्ताव करना चाहिए। पाँचवीं बात—दूसरों का हित हो, ऐसी विधि में रुचि रखें। दूसरों को पीड़ा पहुँचाने का प्रयास न हो। जबान अच्छी बोलें। दाता और याचक का फर्क हाथ की मुद्रा देखकर किया जा सकता है, यह एक प्रसंग से समझाया कि मीठी जुबान से दूसरों का दिल जीता जा सकता है।

अगली बात कि श्रीलक्ष्मी का कभी घमंड नहीं करना चाहिए। लक्ष्मी तो चंचल होती है। प्राण, जीवन और जवानी भी चंचल है, एक धर्म शाश्वत है। अंतिम बात है—अच्छी सत्संगति करनी चाहिए। अच्छे त्यागी साधु की संगति करनी चाहिए। अच्छा साहित्य पढ़ें, अच्छा संपर्क करना चाहिए। ये सात बातें गृहस्थ जीवन के काम की हैं।

शरीर और आत्मा दो चीजें हैं, आत्मा आगे जाने वाली है। शरीर तो नश्वर है, आत्मा स्थायी है। अच्छा जीवन जीते हैं, धर्माचरण, सदाचरण करते हैं तो आत्मा आगे जाकर भी ठीक रह सकेगी। त्यागी संतों के चरणों में शीष झुकाने से आनंद आता है। त्यागी संत तो राजाओं का भी राजा होता है।

साधु के लिए तो धरती ही शैय्या है। हाथ की भुजा उसका सिराहना है। संत के तो खुला आकाश चंदोवा है। संत को तो सहज हवा आती है, वो ही पंखा है। साधु के लिए तो चंद्रमा का प्रकाश ही दीया है। संत तो सारे राजाओं से भी सुखी रहने वाला हो सकता है। हम सभी के जीवन में धर्म रहे। धर्म से सुख मिलता है, कल्याण होता है।

मंगल प्रवचन के उपरांत समुपस्थित ग्रामीणों व अन्य श्रद्धालुओं ने आचार्यश्री की प्रेरणा से अहिंसा यात्रा के तीनों संकल्पों को स्वीकार कर पूज्य गुरुदेव से मंगल आशीर्वाद भी प्राप्त किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

✦ *सहना चाहिए, मौके पर कहना भी चाहिए और शांति के साथ रहना चाहिए।*
– आचार्यश्री महाश्रमण

आदमी असद् भावों से सद् भावों की ओर आगे बढ़े : आचार्यश्री महाश्रमण

आदर्श नगर, सवाईमाधोपुर, १३ दिसंबर, २०२१

तेरापंथ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी आज सवाईमाधोपुर के आदर्श नगर क्षेत्र में पधारे। पूज्यप्रवर ने स्थानीय श्रावक-श्राविकाओं को सम्यक्त्व दीक्षा ग्रहण करवाई। तेरापंथ के राजा ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि अर्हत् वाङ्मय में कहा गया है कि पुरुष अनेक चित्तों वाला होता है। हमारे भीतर भाव जगत हैं। विभिन्न भाव उसमें सन्निहित हैं और वे भाव उभरते भी हैं। जैसे चित्रपट पर चित्र।

कभी आदमी शांति में बैठा दिखाई देता है, तो कभी वह गुस्से में भी दिखाई देने लग जाता है। कभी अहंकार की भाषा बोलता है, तो कभी विनयपूर्ण व्यवहार भी कर लेता है। कभी सरलता के साथ पेश आता है, तो कभी माया-छलना का व्यवहार कर लेता है। कभी संतोष की स्थिति में तो कभी लोभ में भी आ जाता है। यों विभिन्न विरोधी भाव भी हमारे मन रूपी चित्रपट पर आ जाते हैं।

मन या भावों के कारण से आदमी दुःखी भी बन जाता है। तो कभी सुखी भी बन जाता है। संस्कृत श्लोक में कहा गया है कि मन प्रमाद में रहता है, तो कभी प्रमाद के कारण से अनेक विकारों में आ जाने से दुःखी हो जाता है, मन में शांति नहीं रहती है। मन वश या संयत में रहता है, तो वे दुःख भी उसी प्रकार दूर हो जाते हैं, जैसे सूर्य का ताप पड़ने से सर्दी दूर हो जाती है।

हमारा मन, चित्त, भावधारा, लेश्या, अध्यवसाय ये भाव जगत की एक शृंखला है। हमारे भाव शुद्ध-निर्मल रहें। भाव-भाव के कारण आदमी अधोगति का आयुष्य बंध हो ऐसी स्थिति में जा सकता है। भाव-भाव से ऊर्ध्वगति में जाने के लायक भी बन सकता है। जो एक छोटा सा प्राणी है, भाव से सामने नरक में जाने का आयुष्य बंध कर लेता है। हम संज्ञी प्राणी हैं। जिसके पास मन होता है, वो ही प्राणी ज्यादा पाप करता है और ज्यादा धर्म भी कर सकता है।

जिन प्राणियों के मन नहीं है वे न ज्यादा पाप कर सकते हैं और न ज्यादा धर्म भी कर सकते हैं। साखी नरक में जाने लायक पाप आदमी कर सकता है, तो स्वयं में सर्वार्थसिद्ध में जाने के लायक या मोक्ष में जाने के लायक धर्म साधना भी आदमी कर सकता है। एक अपेक्षा से सबसे बढ़िया प्राणी आदमी होता है। आदमी चौदहवें गुणस्थान तक पहुँच सकता है, ऐसी साधना मनुष्य के सिवाय इस सृष्टि का कोई भी प्राणी नहीं कर सकता।

आदमी के पास दिमाग भी है। कितने-कितने आविष्कार किए हैं। आदमियों में अधम मनुष्य भी मिल सकते हैं। जितनी हिंसा-पाप मनुष्य कर सकता है और किसी प्राणी के लिए करना मुश्किल है। धर्म का संदेश है कि अधमता दूर हो। श्रेष्ठता उजागर हो, धर्म का विकास हो, अधर्म का नाश हो। आदमी असद् भावों से सद् भावों की ओर आगे बढ़े। आदमी हिंसा से अहिंसा में, बुराई से अच्छाई की ओर आगे बढ़े।

मुख्य नियोजिकाजी ने कहा कि भारतीय परंपरा में संतों को उच्च स्थान दिया गया है। पुराने समय में राजा-महाराजा ऋषियों-मुनियों से अपनी समस्या का समाधान प्राप्त करते थे।

साध्वी चंद्रिकाश्री जी के प्रति आध्यात्मिक उद्गार

तू तपी-खपी मेरे खातिर

● **साध्वी काम्यप्रभा** ●

जीवन का रथ गतिमान तभी, जब सुगुरु सारथी मिलते हैं।
उपवन के पौधे गणमाली से, सिंचन पाकर खिलते हैं।।

श्री महाप्रज्ञ करकमलों से, संयमश्री का उपहार मिला।
आशीर्वर ओज आहार मिला, अंतर का अनुपम दीप जला।।

पाया तूने सौभाग्य प्रबल, गुरुकुल स्वर्णिम संयोग मिला।
श्रम की स्याही से लिखा हुआ, हर पन्ना-पन्ना रंगीला।।

निर्झर के पावन जल जैसा, देखा है तेरा निर्मल मन।
करुणा का भाव छलकता था, उजला जीया संयम जीवन।।

माधुर्य कंठ में तान मधुर, रचना होती थी अलेबली।
रुचि तत्त्वज्ञान की गहरी थी, समझाने की सुंदर शैली।

मुश्किल घड़ियों में मजबूती, आलस से रहती दूर सदा।
मुस्काती मोहक छवि तेरी, हरपल हरक्षण लगती सुखदा।।

गुरु की उपासना के वे क्षण, बरसाते थे करुणा की धार।
शब्दों से कैसे बयाँ करूँ, बौना है शब्दों का संसार।।

तेरे सह जीने के वे पल, मैं कभी न विस्मृत कर पाऊँ।
तू तपी-खपी मेरे खातिर, उपकृत न उससे हो पाऊँ।।

चंद्रिकाश्री मनभाई

● **साध्वी प्रबुद्धयशा** ●

महाश्रमण प्रभु रै शासन मे, नैया पार लगाई।।

भिक्षु भूमि कंटालियै रो थे, गौरव शिखर चढ़ायो,
महाप्रज्ञ प्रभुवर रै हाथा, संयम जीवन पायो।
जयाचार्य निर्वाण भूमि में तप री अलख जगाई।।
मंत्रीमुनिवर स्मृति कक्ष में परम समाधि पाई।।

परम आत्मबल पायो हो थे गुरु शक्ति भी भारी,
समतायोगी गुरुवचनों से जीवन नैया जारी।
कार्तिक पूनम रै पावन दिन, अग्रिम यात्रा भाई।।

सेवाभावी मनोबली संयम में हा रंगराता,
मुख पर हरपल एक ही वाणी गुरु से गहरा नाता।
ओम भिक्षु ओम भिक्षु स्वामी, जाप सदा सुखदाई।।

कार्यदक्ष, कर्मठ, उत्साही मधुरी थांरी बोली,
महाश्रमणीजी री वत्सलता पाई थे अनमोली।
सहज सरल सादा जीवन अरु तत्त्वज्ञान गहराई।।

गुरुकुलवासी गुरुदिलवासी साध्वी चंद्रिकाश्री,
हँसती खिलती रहती हलपल साध्वी चंद्रिकाश्री,
अच्छा सतियाँ, अच्छा सतियाँ, महाश्रमण री वाणी।
अच्छा सतियाँ लाग्या म्हानै, गुरुवाणी वरदाई।।

अर्हम्

● **साध्वी ऋजुप्रभा** ●

आचार्यश्री तुलसी ने पंचसूत्रम् में लिखा है—'न हि कृतमुपकारं साधवो विस्मरन्ति।' साधु कृत उपकारों को विस्मृत नहीं करते।

वैसे ही मेरे जीवन में अनेक व्यक्तियों का उपकार रहा है। उसमें से एक साध्वी चंद्रिकाश्रीजी भी रहे हैं।

संस्था प्रवेश से दीक्षा तक आपकी मेरे पर अत्यंत वात्सल्य भरी कृपा रही है। सरदारशहर में कंठस्थ Teacher, लाडनूं में संस्था में आपका प्रवास काल तथा दीक्षा के बाद नवदीक्षित के रूप में आपको साथ रहना। मेरे स्मरणीय क्षण बन गए।

विशेष रूप से नवदीक्षित के रूप में साध्वी जिनप्रभा जी के संरक्षण में रहने का मौका मिला तब आप मेरा प्रतिक्रमण सुनते, मेरे बैठने, उठने, खाने, पीने, कपड़े पहनने का भी विशेष ध्यान रखते थे। आपका वह ऋजु ऋजु कहकर पुकारना, ये छोटी है, ये छोटी है कहकर हर बात में लाड़ रखना। मुझे सदा अह्लादभरा लगता।

आपके वे स्वर आज भी सदा कान में गूँजते हैं कि—(१) तुम भी कुछ लाती तो हमें अच्छा लगता अर्थात् (दसवें कंठस्थ कर गुरुदेव से कल्याणक पाना)। (२) दूसरी अगर ठिकाना जमाना हो तो कभी किसी के सामने रोना मत। (३) तुम्हारी चिंता हमें सदा रहती है।

आपका वह हँसता-खिलता चेहरा, कार्यकुशलता, फुर्तीवाला काम, सेवाभावना और साध्वी जिनप्रभा जी के समाधि में विशेष योगभूत बने रहना। ये विशेषताएँ मेरे स्मृति पटल पर सदा अंकित रहती है। आपकी ये विशेषताएँ सचमुच प्रेरणादायक है। अंततः आपकी आत्मा सदा ऊर्ध्वारोहण करती रहे, शीघ्र ही मोक्षश्री का वरण करें। आपके गुणों को हम आत्मसात कर सकें ऐसी शुभाशंसा मंगलभावना है।

चौदह नियम कार्यशाला

राजाजीनगर, बैंगलुरु।

अभातेममं द्वारा निर्देशित 'चौदह नियम कार्यशाला' का आयोजन राजाजीनगर सभा भवन में आयोजित किया गया।

महिला मंडल की बहनों द्वारा नमस्कार महामंत्र एवं मंगलाचरण के द्वारा कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ। अध्यक्ष चेतना वेदमूथा ने अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित कार्यों की जानकारी दी एवं सभी को प्रतिदिन चौदह नियम चितारने की प्रेरणा दी।

बैंगलोर ज्ञानशाला के संचालक जुगराज श्रीश्रीमाल ने चौदह नियमों पर प्रकाश डाला एवं नियमों को सरलता से समझाया। इस कार्यशाला में बहनों ने बहुत ही उत्साह से भाग लिया। कार्यक्रम सुंदर एवं प्रेरणादायी रहा।

जीवन में सद्भावना, मैत्री भाव...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

भविष्य को वर्तमान में देखना चाहिए। भविष्य पर ध्यान न देना बढ़िया बात नहीं है। आज सवाईमाधोपुर आए हैं। ४० वर्ष पहले आचार्य तुलसी ने यहाँ अक्षय तृतीया का महोत्सव किया था। उस समय मैं साथ नहीं आया था। यहाँ की जनता में भी अच्छी भावना, अच्छी धार्मिकता, अच्छे संस्कार रहें, यह मंगलकामना है।

मुख्य नियोजिकाजी ने सवाईमाधोपुर में आचार्यों के प्रवास की जानकारी दी।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में महिला मंडल अध्यक्षा प्रीति जैन, महिला मंडल ने स्वागत गीत, सभा अध्यक्ष नरेंद्र जैन, कन्या मंडल की प्रस्तुति, तेयुप अध्यक्ष अखिल जैन, ज्ञानशाला, अणुव्रत समिति के मंत्री प्रदीप जैन आदि उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
20 - 26 दिसंबर, 2021

✦ *प्रेक्षाध्यान कहता है कि आत्मा को भूलो मत, चेतना के प्रति जागरूक रहो। हम ध्यान के द्वारा भीतर की दुनिया को देखने का प्रयास करें।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

साध्वी चंद्रिकाश्री जी के प्रति आध्यात्मिक उद्गार

स्मृतियों में समाया तेरा व्यक्तित्व

❐ साध्वी जिनप्रभा ❐

साध्वी चंद्रिकाश्री जी चंद्रिका की भाँति उज्ज्वल आभा लेकर संघ धरा पर अवतरित हुई एवं अल्प समय में ही बिजली की भाँति अपनी उजली चमक दिखाकर विलीन हो गई। गौर वर्ण, विशाल ललाट, मोहक मुस्कान युक्त बाह्य व्यक्तित्व से संपन्न साध्वी चंद्रिकाश्री जी का आंतरिक व्यक्तित्व अनेक गुणों का समवाय था।

सौभाग्यशालिनी : तेरापंथ धर्मसंघ में दीक्षित होकर गुरुकुलवास में रहने का अवसर प्राप्त करना, गुरु की निकट सन्निधि एवं अचिन्त्य गुरुकृपा पाना भाग्य की बात होती है। साध्वी चंद्रिकाश्री जी को यह प्राप्त हुआ। साध्वी प्रमुखाश्रीजी ने कहा–"इसी गुरुकृपा तो कोई सौभाग्यशाली नै ही मिलै है। चंद्रिाश्रीजी थे तो परम सौभाग्यशाली हो, गुरुदेव थां पर कित्ती महान कृपा करवा रह्या है।"

सहवास के क्षण : साध्वी चंद्रिकाश्रीजी को दीक्षित होते ही मुझे सौंपा गया। जिस दिन से वे मेरे पास आई, अनन्य बनकर रही। मेरे प्रति उनका गहरा समर्पण भाव था। कभी-कभी तो मुझे ऐसा लगता उनकी दुनिया मेरे इर्द-गिर्द ही सिमटी हुई है।

– वे कोई भी काम मुझे पूछे बिना या दिखाए बिना नहीं करती।

– उनका सोना, उठना, बैठना, प्रायः मेरे निकट ही रहता।

– दीक्षित होते ही अल्प समय में उन्होंने मुझे अनेक दृष्टियों से निश्चिंत बना दिया।

– मेरे लेखन कार्य में उनका पूरा सहयोग था। पांडुलिपि, प्रूफ-रीडिंग, प्रमाण खोजना आदि कार्य पूरे मनोयोग से करतीं। उनके समीक्षात्मक सुझाव बड़े उपयोगी होते।

– उनकी हस्तलिपि कलात्मक, अक्षर सुंदर व लेखन की गति अच्छी थी।

– गायन कला अच्छी थी। उसके साथ-साथ कंठ मधुर एवं गीत रचना में सौष्ठव था।

– उनमें प्रमोद भावना का गुण विशेष रूप से देखने को मिला।

– उनका स्वभाव विनोदी था।

पापभीरूता : वे पापभीरू थीं। हम जहाँ भी प्रवासित होते वे स्थान का बारीकी से प्रतिलेखन करतीं। कहीं चींटियों के बिल, लटें, दीमक, काई आदि तो नहीं हैं।

– वे खिड़की, दरवाजा आदि खोलने-बंद करने में बड़ी सावधानी रखती। कहीं छिपकली, तितली, मच्छर या अन्य कोई जीव मर न जाए।

– जब कभी मार्ग में अधिक जीवों की संभावना होती तब साधना रोककर रजोहरण, प्रमार्जनी या वस्त्र खंड से एक तरफ कर फिर आगे बढ़ती।

संयम की चेतना : वे लंबी तपस्या नहीं करती थी, लेकिन तपस्या के प्रति आकर्षण था। एकासन, आयंबिल, उपवास आदि का क्रम बराबर चलता था।

– उनके आहार का विशेष संयम था। गरिष्ठ, तले हुए एवं फास्ट फूड आदि पदार्थों से पूरा परहेज था।

– प्रायः वर्ग की साध्वियों को वे ही आहार परोसा करती थीं। उनकी परोसने की अपनी कला थी।

– उनके व्यक्तिगत कार्यों में पानी का बहुत संयम था।

– साधु जीवन के आवश्यक पदार्थों को जाँचने से पूर्व वे उनकी उपयोगिता पर दृष्टि रखती थी।

श्रमनिष्ठा : वे श्रमशील थी। साधु जीवन के उपयोगी हर कार्य सीखने की एवं उसमें कौशल प्राप्त करने की उनमें गहरी तड़फ थी। जिस कार्य में जो साध्वियाँ निष्णात थी वे सीखने के लिए उनके पास पहुँच जाती। उन्होंने मुखवस्त्रिका साध्वी चंदनबाला जी से, कमल निकालना साध्वी कल्पलता जी से, पात्र के कांटी लगाना मेरे से, रजोहरण का पोटा, नाकी, डोरी, सांकली आदि साध्वी कुलविभाजी से सीखे।

– वे राज के कार्य निष्ठा व उत्साह के साथ करतीं। जब वे राज के उपकरण धोकर देती तब प्रायः साध्वी सुषमाकुमारी जी कहतीं–चंद्रिकाश्री जी के धोए हुए उपकरण बहुत साफ और व्यवस्थित होते हैं।

– जब काम सामने होता तब उनके लिए खाना, पीना, सोना, पढ़ना सब गौण हो जाता। वे दिन में लेटकर बहुत कम विश्राम करतीं।

– शरीर से वे कोमल थीं लेकिन काम में जुझारू थीं। कड़े से कड़ा और बड़े से बड़ा लोच वे अकेली कर लेती।

स्वच्छता प्रेमी : स्वच्छता, सफाई और चतुराई उनके स्वभावगत थी। गोचरी, आहार-पानी आदि सब कार्यों से पूर्व वे अच्छे से हाथ धोती थीं। सहवर्ती साध्वियों को भी सफाई के लिए प्रेरित करती थीं।

तत्त्वज्ञान : तत्त्वज्ञान उनकी रुचि का विषय था। तत्त्वज्ञान की गहराई में उतरने का प्रयास करती थीं। उनको तत्त्वज्ञान की पुस्तकें तथा आगम पढ़ने का ही शौक था। अन्य पत्र-पत्रिकाएँ बहुत कम पढ़ती थीं।

– 'जैन भूगोल' उनका प्रिय विषय था। जैन भूगोल एवं तत्त्वज्ञान की कक्षाएँ लेने वाले शायद उन्हें भूल नहीं सकेंगे।

– वे जिज्ञासु वृत्ति की थीं। पढ़ते समय जहाँ कहीं भी जिज्ञासा उभरती वे उनका उत्तर खोलती रहतीं।

जपनिष्ठा : वे भक्त हृदय थी। उनमें भक्ति भावना विशेष परिलक्षित होती थी। विहारों में जहाँ कहीं भी मंदिर दिखाई देता, वे मंगलपाठ अवश्य सुनाती।

– कठिन परिस्थिति सामने आने पर वे जप-तप से ही ठीक करने का प्रयास करती।

– उनका जप का क्रम नियमित था। कितनी भी व्यस्तता हो प्रायः जप नहीं छोड़ती। कभी-कभी दिन में समयाभाव के कारण जप नहीं होता तो देर रात्रि तक जप करती।

– उनकी नवकार मंत्र एवं भिक्षु स्वामी पर बहुत श्रद्धा थी। प्रायः उनके मुख पर नवकार मंत्र और ॐ भिक्षु का ही नाम रहता। कई साध्वियाँ उन्हें 'भिक्षु स्वामी की भक्ता' कहकर ही पुकारती।

व्याधि में भी परम समाधि : उनकी सहिष्णुता गजब की थी। असाध्य व्याधि को उन्होंने मनोबल, आत्मबल, समता और धैर्य के साथ सहन किया। बीमारी के कारण उन्हें एक क्षण तक उनके चेहरे पर प्रसन्नता और समता झलकती रही। वे व्याधि में भी परम समाधि में रही।

गुरु भक्ति : उनमें गुरु भक्ति बेजोड़ थी। गुरुदेव द्वारा प्रदत्त मंत्र पर उनकी अगाध श्रद्धा थी। जब कभी प्रसंग आता वे कहती, गुरुदेव का मेरे ऊपर अनंत उपकार है।

साध्वी चंद्रिकाश्री जी को भीलवाड़ा आने के बाद गुरुदेव का जो कृपाप्रसाद और करुणा दृष्टि मिली, श्रद्धेय महाश्रमणीजी का जो अनुपम वात्सल्य मिला, मुख्य नियोजिकाजी एवं साध्वीवर्याजी का जो स्नेह मिला और सब साध्वियों का जो आत्मीयभाव मिला वह साध्वी चंद्रिकाश्री जी के जीवन का स्वर्णिम अध्याय बन गया।

लगभग १५ वर्ष साध्वी चंद्रिकाश्री जी मेरे साथ रही। वे प्रायः स्वस्थ रही। उनके दवाई लेने का विशेष काम नहीं पड़ा। दवाई के नाम से ही उन्हें परहेज जैसे था। जब से मैंने साधन लिया, एक दिन भी उन्होंने साधन चलाना नहीं छोड़ा। मुझे जहाँ कहीं जाना होता, वे स्वयं मेरे साथ चलती, दूसरों के सहारे नहीं छोड़ती। बार-बार मन में आता है वे इतनी स्वस्थ, प्रसन्न, विनोदी स्वभाववाली, कर्मठ, जिम्मेदार साध्वी कैसे इतनी जल्दी चली गई। खैर! यह चिंतन का विषय नहीं। वे इतनी ही उम्र लेकर आई होंगी। लेकिन इस थोड़ी उम्र में उन्होंने जो अपने व्यक्तित्व की छाप छोड़ी, वह आज मात्र स्मृति का विषय है शब्दों का विषय नहीं है।

साध्वी चंद्रिकाश्रीजी!

तुम अल्प समय की संयम पर्याय में अपना कर्तृत्व दिखाकर सदेह हमारे से ओझल हो गई पर तुम्हारी विशेषताएँ स्मृतियों के दर्पण में सदैव प्रतिबिंबित होती रहेंगी। अंत में तुम्हारे प्रति यही मंगलकामना–तुम जहाँ भी हो तुम्हारी आत्मा उत्तरोत्तर आध्यात्मिक आरोहण करें और अपनी लक्षित मंजिल को प्राप्त करें।

साध्वी चंद्रिकाश्री जी के प्रति आध्यात्मिक उद्गार

गुरुकुलवासी - गुरुदिलवासी

● साध्वी विधिप्रभा ●

हँसता-खिलता था उपवन, चंद्रिकाश्री का जीवन
भैक्षवगण में आकर होऽऽऽ, सबके दिल में छाई रे।

सहज सरल जीवन तेरा, रहती थी अपने में लीन
चेहरे पर हरक्षण मुस्कान, वाणी मधुरी थी ज्यों बीन
तेरी मनहारी सूरत होऽऽऽ, सबके मन को भाई रे।।१।।

ज्ञान और स्वाध्याय रुची, रग-रग में था शुभ संस्कार
वय छोटी पर काम बढ़े, सैनिक बन रहती तैयार
गुरु की करुणा से होऽऽऽ, गण महिमा महकाई रे।।२।।

कृपासिंधु श्री महाश्रमण बरसाई नित कृपा अपार
ममतामूरत महाश्रमणी से, पाया स्नेहिल उपहार
गुरुकुल वासी बन होऽऽऽ, गुरुवर दिल में छाप जमाई रे।।३।।

व्याधि असाध्य भले आई, तेरी समता से हारी
समाधिस्थ देखा हरपल, ओम् भिक्षु से इकतारी
जयपुर नगरी में होऽऽऽ, अंतिम झलक दिखाई रे।।४।।

लय : जीवन है पानी की बूँद----

जीवन धन्य बनाया

● साध्वी स्वस्तिक-कौशलप्रभा ●

जीवन धन्य बनाया।
गुरुकुलवासी बनकर गुरु सन्निधि का लाभ उठाया।।

महाप्रज्ञ गुरुवर शासन में मिला अमोला संयम
जप से तेरी जुड़ी इकतारी लक्ष्य बना था उपशम
डेढ़ दशक की संयम-यात्रा, देशाटन खूब सुहाया।।
जीवन धन्य बनाया।।

हँसता-खिलता चेहरा हरदम मीठी-मीठी वाणी
मिलनसारिता, कार्यकुशलता पौरुष की सहनाणी
सार तत्त्व का समझा गहरा, जन-जन को समझाया।।
जीवन धन्य बनाया।।

छोटी वय में सही वेदना हद हिम्मत दिखलाई
समय-समय पर दर्शन देकर सेवा खूब कराई
महाश्रमण गुरु महाश्रमणी ने कृपा भाव बरसाया।।
जीवन धन्य बनाया।।

लय : संयममय जीवन हो---

आध्यात्मिक मिलन समारोह

जसोल।

मुनि स्वास्तिक कुमार जी व मुनि सुपार्श्व कुमार जी का बालोतरा से विहार कर जसोल में प्रवेश हुआ। मुनि धर्मेश कुमार जी आदि ठाणा-३ व मुनि स्वास्तिक कुमार जी आदि ठाणा-२ यानी दोनों सिंघाड़ों का आध्यात्मिक मिलन माता राणी भटीयाणी मंदिर के पास हुआ। बालोतरा, जसोल के श्रावक समाज ने इस आध्यात्मिक मिलन को निहारकर धन्यता का अनुभव किया। तत्पश्चात मेन बाजार स्थित ओसवाल समाज, जसोल में प्रवेश हुआ। मुनिश्री का स्वागत-अभिनंदन कार्यक्रम रखा गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ तेममं के स्वागत गीत से हुआ। कार्यक्रम में लीलादेवी सालेचा, शंकरलाल ढेलड़िया, तेरापंथ सभा के अध्यक्ष मोतीलाल जीरावला, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष पारसमल गोलेच्छा, धनराज तातेड़ आदि वक्ताओं ने विचार व्यक्त किए। मुनि सुपार्श्व कुमार जी, मुनि यशवंत कुमार जी, मुनि विनोद कुमार जी, मुनि स्वास्तिक कुमार जी व मुनि धर्मेश कुमार जी ने अपने विचारों से स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री माणकचंद संकलेचा ने किया।

संघ के विकास में हमारा दायित्व कार्यक्रम

डी०वी० कॉलोनी, सिकंदराबाद।

साध्वी मधुस्मिता जी एवं साध्वी काव्यलता जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, डी०वी० कॉलोनी, सिकंदराबाद में तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में संघीय विकास में हमारा दायित्व कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद के गठन के एक वर्ष के कार्यकाल में सहयोग देने वाले सभी श्रावकों का सम्मान करना था। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल की बहनों के मंगलाचरण से हुआ। महिला मंडल अध्यक्ष अनिता गीड़िया, वरिष्ठ श्रावक राजकुमार सुराणा, तेयुप के अध्यक्ष प्रवीण श्यामसुखा, टीपीएफ के अध्यक्ष मोहित बैद, अणुव्रत समिति अध्यक्ष प्रकाश भंडारी, जैन तेरापंथ वेलफेयर सोसाइटी से बाबूलाल बैद ने कार्यक्रम के प्रति अपनी शुभकामनाएँ व्यक्त की।

तेरापंथी सभा के अध्यक्ष सुरेश सुराणा ने सभी का स्वागत किया। महेंद्र दुगड़ ने रास्ते की सेवा के लिए सभी से अपील की। हिंदी मिलाप से सह-संपादिका सरिता बैद ने अपना उद्‌बोधन दिया। सभा के उपाध्यक्ष बाबूलाल बैद द्वारा सिकंदराबाद सभा के एक वर्ष पूर्ण होने पर विगत एक वर्ष में किए गए कार्यों की संक्षिप्त प्रस्तुति दी। साध्वी काव्यलता जी व साध्वी मधुस्मिता जी ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए।

इस अवसर सिकंदराबाद सभा को सहयोग देने वालों का बहुमान सभा द्वारा दिया गया। अंत में आभार ज्ञापन मंत्री सुशील संचेती द्वारा किया गया। कार्यक्रम में अच्छी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन राकेश सुराणा व लक्ष्मीपत बैद ने किया।

उत्कर्ष के अनावरण समारोह का आयोजन

मुंबई।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के मुंबई आगमन की पूर्व तैयारी एवं २०२३ के मुंबई चातुर्मास में आध्यात्मिक भेंट के रूप में तेरापंथी सभा, मुंबई द्वारा तैयार एक नए उपक्रम 'उत्कर्ष' का अनावरण समारोह का आयोजन चेंबूर, तेरापंथ भवन में आगम मनीषी प्रोफेसर मुनि महेंद्र कुमार जी स्वामी व सहवर्ती संतों के सान्निध्य में हुआ।

आयोजन का शुभारंभ चेंबूर, महिला मंडल के संगीतमय मंगलाचरण से हुआ। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष नरेंद्र तातेड़ ने सभी आगंतुकों का स्वागत किया और उन्हें उत्कर्ष उपक्रम से जुड़ने की प्रेरणा दी। आचार्य महाश्रमण २०२३ चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष मदन तातेड़ ने मुंबई सभा के इस उपक्रम की सराहना करते हुए इसे प्रासंगिक बताया। तेरापंथ महिला मंडल, मुंबई की अध्यक्षा रचना हिरण ने महिला मंडल के माध्यम से पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया।

आगम मनीषी प्रोफेसर महेंद्र कुमार जी स्वामी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए उत्कर्ष से श्रावकों के सम्यक्त्व विकास पर जोर देते हुए कहा कि जब तक हम सम्यक्त्व हासिल नहीं करेंगे तब तक हम अपने आपको सच्चा श्रावक नहीं बता सकते और सच्चा श्रावक ही गुरुवर का सच्चा स्वागत कर सकता है, इसलिए जरूरी है कि हम सभी इस ओर बढ़ें।

मुनि सिद्धकुमार जी ने कहा कि अणुव्रत जीवन विज्ञान, तेरापंथ दर्शन, तत्त्वज्ञान, ज्ञानशाला, बारह व्रत, उपासक श्रेणी, सुमंगल साधक, न्यातिले परिवार इन विषयों पर उत्कर्ष करना है। जिसका एक सुनियोजित पाठ्यक्रम भी होगा और प्रशिक्षक भी होंगे और ये सब ऑनलाइन होगा और बहुत ही सरल रूप से होगा ताकि अधिक-से-अधिक श्रावक जुड़ सकें। मुनि अभिजीत कुमार जी ने अपने वक्तव्य में उत्कर्ष से जीवन का निष्कर्ष निकालते हुए आत्मदर्शन कर गुणवान बनने और अपने जीवन में परिवर्तन लाए, ऐसी प्रेरणा दी। मुनि जंबूकुमार जी ने यथाशक्ति बारहव्रती श्रावक बन आध्यात्मिक उत्कर्ष के पथ पर बढ़ने की आवश्यकता बताई। मुनि अजीत कुमार जी ने सुमधुर गीतिका का संगान किया।

उत्कर्ष संयोजक रतन सियाल ने उत्कर्ष को जीवन का स्वर्णिम अवसर बनाने का माध्यम बताया और सभी सभा-संस्थाओं से सहभागी बनने का आह्वान किया। अभातेममं की पूर्व महामंत्री तरुणा बोहरा ने उत्कर्ष के उत्साह को बनाए रखने और बढ़ाए रखने की बात की और सफलता की शुभकामनाएँ दी। टीपीएफ, मुंबई के पूर्व अध्यक्ष दीपक डागलिया ने उत्कर्ष प्रोजेक्ट रजिस्ट्रेशन की पूरी प्रक्रिया को डेमो के माध्यम से समझाया। उत्कर्ष की सह-संयोजिका जयश्री बड़ाला ने सभी के सहयोग के प्रति आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन सभा के मंत्री विजय पटवारी ने किया।

इस अवसर पर अभातेममं ट्रस्टी प्रकाश देवी तातेड़, अभातेममं की पूर्व अध्यक्ष, कुमुद कच्छारा, तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन के अध्यक्ष के०एल० परमार, अणुव्रत समिति की अध्यक्ष कंचन सोनी, मंत्री वनिता बाफना, टीपीएफ के मंत्री दिलखुश सहित सभा पदाधिकारी, क्षेत्रीय समितियों, उपसमितियों के सदस्य, महिला मंडल की संयोजिकाएँ, सह-संयोजिकाएँ, कार्यकारिणी सदस्यों के साथ बड़ी संख्या में श्रावक समाज उपस्थित था।

अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम

सत्र 2021-23

✻ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
✻ श्री अशोक श्रेयांस बरमेचा, तारानगर-हैदराबाद	11,00,000
✻ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
✻ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
✻ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
✻ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
✻ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
✻ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
✻ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
✻ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000

जैन संस्कार विधि

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन

जैन विधि - अमूल्य निधि

शुभ विवाह

रायपुर।

आकाश (सुपुत्र विकास जैन-मोनिका जैन, इंदौर) का शुभ विवाह श्रेया (सुपुत्री राजेश कवाड़-कल्पना कवाड़ तंरपोगी) के संग संपन्न करवाया गया। संस्कारक अनिल दुगड़ व सूर्यप्रकाश बैद ने नवदंपति को संकल्पों से संकल्पित करवाते हुए विधिवत मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ विवाह विधि को संपादित किया।

तेयुप अध्यक्ष वीरेंद्र डागा ने नवदंपति को मंगलमय नवजीवन पथ हेतु शुभकामनाएँ दी। दोनों ही परिवार तेरापंथ से संबंधित ना होकर स्थानकवासी व दिगंबर परंपरा को मानने वाले हैं। संस्कार विधि में विशेष रूप से तेयुप दुर्ग के अध्यक्ष शुभम बरमेचा व तेयुप रायपुर मंत्री गौरव दुगड़, उपाध्यक्ष सुमित जैन, जैन संस्कार विधि प्रभारी सुशील डागा के साथ परिजन उपस्थित थे।

गृह प्रवेश

सूरत।

सूरत प्रवासी नीरज-रेखा लुनिया के नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजयकांत खटेड़, धर्मचंद सामसुखा ने संपूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानंद संपन्न करवाया। संस्कारकों की प्रेरणा से सभी ने अपने सामर्थ्य अनुसार त्याग-प्रत्याख्यान किया।

नीरज व उनके सभी परिजनों ने जैन संस्कार विधि को उपयोगी बताते हुए सभी का आभार ज्ञापन किया। तेयुप, सूरत की ओर से मंगलभावना पत्रक भेंट किया।

नामकरण संस्कार

हैदराबाद।

लक्ष्मीपत-अनिता सेखानी के पौत्र एवं चिराग-साधना सेखानी के सुपुत्र का नामकरण संस्कार जैन विधि अनुसार संस्कारक आशीष दक द्वारा विधिवत संपन्न हुआ। इस अवसर पर तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद के संगठन मंत्री संजय कुचेरिया एवं पारिवारिक जन उपस्थित थे।

नूतन गृह प्रवेश

अहमदाबाद।

मैनाक महावीर भरसारिया के जैन संस्कार विधि से नूतन गृह प्रवेश करवाया गया। संस्कारक आनंद बोथरा, दिनेश बागरेचा एवं वैभव कोठारी ने मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ मंगलभावना पत्र स्थापित कर गृह प्रवेश विधि को संपादित किया।

तेयुप की ओर से भरसारिया परिवार को मंगलभावना यंत्र की भेंट दी गई। कार्यक्रम का संचालन तेयुप मंत्री कपिल पोखरना ने किया। परिवार की ओर से विशाल भरसारिया ने तेयुप एवं संस्कारकों के प्रति आभार ज्ञापित किया।

नामकरण संस्कार

सूरत।

चुरू निवासी, सूरत प्रवासी उम्मेद कुमार पारख के सुपुत्र राजकुमार-सुरभि पारख के प्रांगण में पुत्र रत्न हुआ। जिसका नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक धर्मचंद सामसुखा, मनीष मालू ने संपूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानंद संपन्न करवाया। उम्मेद कुमार ने उपस्थित पारिवारिकजन का आभार ज्ञापन किया। नामकरण संस्कार के साथ स्वर्ण सीढ़ी आरोहण का संस्कार भी रखा गया।

तेयुप, सूरत उपाध्यक्ष प्रथम महेश संकलेचा ने दुगड़ परिवार का आभार ज्ञापन किया। सहमंत्री विजय सुराणा उपस्थित रहे, मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

नूतन गृह प्रवेश

सूरत।

सूरत प्रवासी कमोल निवासी चांदमल परमार के सुपुत्र नरेश परमार के नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक कांतिभाई मेहता एवं मीठालाल भोगर ने संपूर्ण विधि से मंगल मंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

चांदमल परमार एवं उनके पूरे परिवार ने संस्कारक व सभी आगंतुकों का आभार ज्ञापन किया। तेयुप, सूरत द्वारा मंगलभावना पत्र भेंट किया गया।

नूतन गृह प्रवेश

पूर्वांचल कोलकाता।

पूर्वांचल-कोलकाता प्रवासी नवीन कुमार बैद का नूतन गृह प्रवेश अभातेयुप संस्कारक पुष्पराज सुराणा ने संपूर्ण विधि-विधान द्वारा संपादित करवाया।

जैन संस्कार विधि के संयोजक विनोद बरड़िया ने परिषद की ओर से बैद परिवार के लिए मंगलभावना यंत्र प्रदान किया। साथ ही बैद परिवार के प्रति आभार ज्ञापन किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
20 - 26 दिसंबर, 2021

✦ *जीवन क्षणभंगुर है, इसलिए आत्मकल्याण व पवित्र कार्यों की दृष्टि से सबको सजग रहना चाहिए।*
–आचार्यश्री महाश्रमण

आत्मा के आसपास

❑ **आचार्य तुलसी** ❑

प्रेक्षा : अनुप्रेक्षा

अंतर्यात्रा

अंतर्यात्रा हो यदा, चंचल चित्त प्रशान्त।
अंतर्मुखता से सदा, बनता नर निर्भ्रान्त।।
भीतर हो जब चेतना, भासित सहज स्वभाव।
रहे निरंतरता अगर, हट जाता परभाव।।

प्रश्न : साधक साधना करना चाहता है। साधना का एक महत्त्वपूर्ण अंग है–ध्यान। ध्यान के लिए उपयुक्त आसन में बैठना और कायोत्सर्ग द्वारा शरीर को शिथिल करना इतना कठिन नहीं है, पर विश्व-भ्रमण के लिए निकले हुए चित्त को वापस लौटाना सीधी बात नहीं है। भ्रमणशील चित्त को भीतर लाने के लिए आप क्या प्रक्रिया सुझाते हैं?

उत्तर : ध्यान का अर्थ है–चित्त को भीतर लाना। अध्यात्म का अर्थ है–अंतर्मुखी बनना। ऐसी स्थिति में चित्त को एकाग्र बनाने के लिए कोई उपाय न करना साधना के पथ में भटकना है। क्योंकि चैतसिक एकाग्रता और निर्मलता के बिना साधना का विकास नहीं हो सकता।

मनुष्य की वृत्तियाँ दो प्रकार की होती हैं–बाह्य और आंतरिक। अथवा इस तथ्य को यों भी कहा जा सकता है कि वृत्तियों के आधार पर मनुष्य दो प्रकार के होते हैं–बहिर्मुखी और अंतर्मुखी। बहिर्मुखता स्वाभाविक है और अंतर्मुखता साधना-सापेक्ष है। बहिर्मुख बनने के लिए कुछ करना नहीं पड़ता, जबकि अंतर्मुखता के लिए तीव्र प्रयत्न की अपेक्षा रहती है। प्रत्येक आध्यात्मिक व्यक्ति के लिए अंतर्मुखी होना बहुत जरूरी है, पर ऐसा होना बहुत कठिन है। मनुष्य की इंद्रियाँ और मन बार-बार बाहर की ओर दौड़ते हैं। बाहर की ओर उनकी दौड़-धूप इतनी तीव्र होती है कि उन्हें भीतर मुड़कर देखने का अवकाश ही नहीं रहता। उन्हें भीतर रखने का जितना प्रयत्न किया जाता है, उनकी चंचलता उतनी ही बढ़ती जाती है। जब तक चंचलता कम नहीं होती, अंतर्मुखता नहीं आ सकती। जब तक अंतर्मुखता नहीं आती है, व्यक्ति को जानकारी नहीं हो सकती कि उसके भीतर क्या है? इस जानकारी के अभाव में वह इस सचाई को भी अनुभव नहीं कर सकता कि बहिर्मुखता के कारण उसकी शक्तियों का जागरण नहीं हो रहा है।

प्रश्न : मनुष्य अपने जीवन में शांति और सुख का अनुभव करे, यह आवश्यक है। पर यह बहिर्मुखता और अंतर्मुखता का दर्शन इतना जटिल है कि इसमें उलझने वाला अपनी स्वाभाविक शांति से भी हाथ धो बैठता है। यदि मनुष्य की चेतना बहिर्मुखी है तो उससे उसको क्या नुकसान उठाना पड़ता है?

उत्तर : बहिर्मुखता भ्रांतियों की जननी है। भ्रांत व्यक्ति सत्य को असत्य मानता है और असत्य को सत्य। उसे पदार्थ-जगत में सुख और सार का अनुभव होता है। इंद्रिय-विषयों के सुख को वह अपनी अंतिम मंजिल मानकर चलता है। उसका सारा आकर्षण बाह्य संसार में सिमट जाता है। यह स्थिति तब तक रहती है, जब तक उसकी भ्रांतियाँ नहीं टूटतीं। भ्रांति तोड़ने का एक ही रास्ता है, वह है अंतर्यात्रा का। इससे चित्त भीतर लौटता है, प्रशांत बनता है और विचारों के द्वंद्व से मुक्त होता है। जैसे दिन-भर का थका हुआ आदमी घर पहुँचकर थकान दूर करता है, वैसे ही भ्रांतियों में उलझा हुआ चित्त केंद्रित होकर स्वस्थ बनता है। जब तक भ्रांतियों का घेरा दृढ़ है, तब तक जिस सुख और शांति का अनुभव करता है, वह भी उसका भ्रम ही है। भ्रम की घाटी में जो सघन अंधकार है उसको अंतर्यात्रा से उपलब्ध प्रकाश ही मिटा सकता है।

प्रश्न : अंतर्यात्रा से आपका क्या अभिप्राय है?

उत्तर : अंतर्यात्रा का संबंध हमारी पृष्ठरज्जु से है। पृष्ठरज्जु हमारा केंद्रीय नाड़ी संस्थान है। इसके दोनों ओर दो नाड़ियाँ हैं, जो इडा और पिंगला नाम से पहचानी जाती हैं। इडा पैरासिम्पैथेटिक नर्व सिस्टम (परानुकंपी नाड़ी) है। और पिंगला सिम्पैथेटिक (अनुकंपी)। इन्हें चंद्रनाड़ी और सूर्यनाड़ी भी कहा जाता है। इडा पृष्ठरज्जु के बाईं ओर होती है तथा पिंगला दाईं ओर। केंद्रीय नाड़ी-संस्थान सुषुम्ना के नाम से प्रसिद्ध है। जब हमारी प्राणधारा सुषुम्ना से बाहर निकलकर इडा और पिंगला से प्रवाहित होने लगती है तब बहिर्मुखता आ जाती है। क्योंकि इससे चेतना का बिखराव होता है। प्राण-प्रवाह सुषम्ना से बहता है तो चेतना को भीतर जाने का मार्ग उपलब्ध हो जाता है। चेतना भीतर जाती है और साधक उसका अनुभव करने में सफल हो जाता है, वह क्षण आत्मसाक्षात्कार का क्षण होता है। उस क्षण में जो अनुभूति होती है, वह अनुभव का ही विषय है। इसलिए ध्यान में जाने से पूर्व चेतना को केंद्रित करने के लिए अंतर्यात्रा की प्रक्रिया अपने आप में विशिष्ट और अमोघ है।

प्रश्न : जो साधक इडा, पिंगला और सुषुम्ना को जानता ही न हो, वह अंतर्यात्रा कैसे करेगा? अंतर्यात्रा की सीधी-सी प्रक्रिया क्या है?

उत्तर : ध्यान-साधक के लिए शरीर तंत्र का ज्ञान होना भी जरूरी है। क्योंकि यह शरीर से आत्मा तक पहुँचने का रास्ता है। शरीर के ऊपर का भाव स्पष्ट है, पर उसके भीतर इतने पुर्जे हैं कि उनकी पूरी जानकारी बड़े-बड़े डॉक्टरों को भी नहीं होती। ध्यान एक ऐसा माध्यम है, जो आत्मा की भाँति शरीर के अज्ञात रहस्यों को भी प्रकट कर सकता है। किंतु यह ध्यान की बहुत ऊँची भूमिका तक पहुँचने पर ही हो सकता है। प्रारंभिक भूमिका में विशेष चार्ट्स और शरीर विशेषज्ञों के सहयोग से शरीर के प्रमुख-प्रमुख भीतरी अंगों का ज्ञान हो सकता है। उतना ज्ञान करने के बाद अंतर्यात्रा का क्रम सहज रूप से आगे बढ़ सकता है।

अंतर्यात्रा में चित्त को बाह्य विषयों से प्रतिसंलीन कर शक्ति-केंद्र पर लाना होता है। उसके बाद उसे सुषुम्नामार्ग से ज्ञान-केंद्र तक ले जाना होता है। चित्त के द्वारा प्राणधारा का ऊर्ध्वारोहण इस यात्रा का उद्देश्य है। ज्ञान-केंद्र से फिर चित्त को शक्ति-केंद्र तक लाया जाता है और पुनः प्राणधारा के ऊर्ध्वारोहण हेतु ज्ञान-केंद्र तक पहुँचाया जाता है। शक्ति-केंद्र शक्ति का अक्षय केंद्र है। मस्तिष्क को जिस प्राण-ऊर्जा की जरूरत रहती है, वह अंतर्यात्रा से ऊर्ध्वारोहित होकर वहाँ पहुँच जाती है। इस क्रम को उदाहरण से समझा जा सकता है।

कुएँ में पानी होता है। आदमी को पानी की अपेक्षा होती है। पानी नीचे है, वह उसे सीधा प्राप्त नहीं कर सकता। इसलिए बालटी को माध्यम बनाता है। बालटी नीचे जाती है। और अपने भीतर पानी भरकर ऊपर आ जाती है। वहाँ वह खाली होती है और पुनः कुएँ में पहुँचकर पानी ले आती है। बालटी के यातायात से आदमी को पर्याप्त पानी उपलब्ध हो जाता है। इसी प्रकार चित्त प्राण-ऊर्जा को मस्तिष्क तक पहुँचाने के लिए बालटी का काम करता है।

(क्रमशः)

साँसों का इकतारा

❑ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा** ❑

(४१)

आज तक माँगा नहीं तुमसे कभी कुछ
माँगने की बात अब मन में समाई
अगर देना हो परम वह तत्त्व दे दो
पा जिसे हर चाह मेरी हो पराई।।

आंज दो आलोक आँखों में अगर तुम
चाह दीपक की नहीं उर में जगेगी
हौसला तम का स्वयं ही पस्त होगा
ज्योति से इस चित्त की जब लौ लगेगी
छल न पाएगी कभी छलना किसी की
सत्य से पहचान तुमने ही कराई।।

भीरुता से मित्रता करती नहीं मैं
पर कठिन हर राह में वह साथ होती
देखती हूँ नित नए सपने सलोने
पर उजाले में अचानक रात होती
क्या सहारा बन सकूँगी दूसरों का
प्रीत खुद से भी नहीं मैंने निभाई।।

किला आस्था का रचो मजबूत इतना
तीर संशय के न उसको तोड़ पाए
दो समर्पण का कवच दुर्भेद्य ऐसा
जय-पराजय की न फिर चिंता सताए
एक गहरी प्यास ही तुम मुझे दे दो
नीर से मैंने न अब तक तृप्ति पाई।।

बिना पुकारे ही रहे वत्सल सदा तुम
भूल पाऊँगी कभी उपकार तेरा?
जिंदगी पाषाण-सी कोरी पड़ी थी
चित्र सतरंगा वहाँ तुमने उकेरा
है हिमालय शिखर-सा संकल्प उन्नत
शांति की धारा विमल तुमने बहाई।।

(४२)

पंख लगा सपनों के तुमने मनचाही हर मंजिल पाई।
हर मंजिल पर खड़ा सामने नया स्वप्न लेकर अंगड़ाई।।

सघन कुहासा कभी न पथ में डिगा सका विश्वास तुम्हारा
संघर्षों से बतियाने में नहीं कभी भी पौरुष हारा
सूने गलियारों में तुमने मुसकानों की हाट लगाई।।

थम जाती है हवा जहाँ पर तुम आँधी को वहाँ बुलाते
हो ठहराव कहीं कितना ही तुम बहाव की बात सुनाते
पतझर के मौसम में तुमने नव गीतों की फसल उगाई।।

चौराहे पर भटक गया मन बिना पते का खत हो जैसे
किया नियोजित सहसा उसको साँसों की सरगम पर कैसे
स्याह हुई जब राह मनुज की तुमने उजली ज्योति जलाई।।

ऐसी किरण बिछाओ मग में मन का अंधियारा धुल जाए
उष्मा सहज मिले प्राणों को नयन तीसरा झट खुल जाए
आज सलोनी सुबह दे रही नए छंद रच तुम्हें बधाई।।

(क्रमशः)

संबोधि

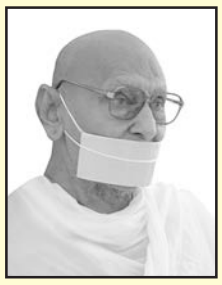

❑ **आचार्य महाप्रज्ञ** ❑

आज्ञावाद

भगवान् प्राह

(३४) अहिंसाऽऽराधिता येन, ममाज्ञा तेन साधिता।
आराधितोस्मि तेनाहं, धर्मस्तेनात्मसात्कृतः।।

जिसने अहिंसा की आराधना की, उसने मेरी आज्ञा की आराधना की है। उसने मुझे आराध लिया है और उसने धर्म को आत्मसात् कर लिया है।

(३५) अहिंसा विद्यते यत्र, ममाज्ञा तत्र विद्यते।
ममाज्ञायामहिंसायां, न विशेषोस्ति कश्चन।।

जहाँ अहिंसा है वहाँ मेरी आज्ञा है। मेरी आज्ञा और अहिंसा में कोई भेद नहीं है।

(३६) भीतानामिव शरणं, क्षुधितानामिवाशनम्।
तृषितानामिव जलं, अहिंसा भगवत्यसौ।।

यह भगवती अहिंसा भयभीत व्यक्तियों के लिए शरण, भूखों के लिए भोजन और प्यासों के लिए पानी के समान है।

महावीर कहते हैं—मेरी आज्ञा और अहिंसा में कोई द्वेत नहीं है। जो आज्ञा है वही अहिंसा है और जो अहिंसा है वही आज्ञा है। अहिंसा और आज्ञा में अंतर नहीं है। अहिंसा और प्रेम में भी अंतर नहीं है। जीसस ने कहा है—'लव इज गोड' (Love is God) प्रेम परमात्मा है। परमात्मा को साध लो प्रेम सध जाएगा। प्रेम को साध लो परमात्मा सध जाएगा। परमात्मा प्रेम का पूर्ण रूप है। अनेक संत प्रेम की भाषा में बोले हैं। किंतु उनका प्रेम किसी में आबद्ध नहीं था। सीमाबद्ध प्रेम होता तो फिर वह प्रेम घृणा से अछूता नहीं होता, उसके पीछे मिश्रित रूप से घृणा की छाया होती। वह अस्थायी होता, स्थायी नहीं होता। अहिंसा की विधायक भाषा प्रेम है। जैसे-जैसे आत्मा का सर्वोच्च रूप निखरता जाएगा, अहिंसा-प्रेम भी विस्तृत और व्यापक बनता चला जाएगा। 'मैं और मेरे' की संकीर्णदृष्टि निर्मूल हो जाएगी। संकीर्णता, स्वार्थ, घृणा आदि का जहाँ अस्तित्व रहता है वहाँ अहिंसा की धारा कैसे प्रवहमान रह सकती है? अहिंसा के अभाव में मानव-जगत् शांति से जीवित नहीं रह सकता। इसलिए अहिंसा को त्राण कहा है।

(३७) शुद्धं शिवं सुकथितं, सुदृष्टं सुप्रतिष्ठितम्।
सारभूतञ्च लोकेऽस्मिन्, सत्यमस्ति सनातनम्।।

इस लोक में सत्य शुद्ध, शिव, सुभाषित, सुदृष्ट, सुप्रतिष्ठित, सारभूत और सनातन/शाश्वत है।

भगवान् महावीर ने कहा—'सच्चं लोगम्मि सारभूयं'—सत्य लोक में सारभूत है। 'सच्चं भयवं'—सत्य ही भगवान् है। यह सत्य की महिमा है। प्रश्न होता है कि सत्य क्या है? इसका उत्तर है—'तमेव सच्चं निस्संकं जं जिणेहिं पवेइयं'—सत्य वही है जो आत्मपुरुषों द्वारा कथित है। 'निग्गंथं पावयणं सच्चं'—निर्ग्रंथ व्यक्तियों का जो प्रवचन है, वह सत्य है। सत्य का यह स्वरूप व्यापक और सर्वग्राह्य है। यथार्थ-द्रष्टाओं का दर्शन सत्य है। यथार्थ-द्रष्टा वे होते हैं, जिनके राग-द्वेष और मोह आदि दोष नष्ट हो जाते हैं और जिनका ज्ञान अबाधित होता है। अतीन्द्रिय ज्ञान सत्य का घटक होता है। सत्य किसी सीमा में आबद्ध नहीं होता। वह व्यापक और सार्वजनिक होता है। स्वभाव सत्य है, विभाव असत्य।

(३८) महातृष्णाप्रतीकारं, निर्भयञ्च निरास्रवम्।
उत्तमानामभिमतं, अस्तेयं प्रत्ययास्पदम्।।

अचौर्य बढ़ती हुई तृष्णा का प्रतिकार, भयमुक्त करने वाला, अनेक बुराइयों से बचाने वाला, उत्तम जनों द्वारा अभिमत और विश्वास का आस्थान है।

अदत्त का शाब्दिक अर्थ है—बिना दिया हुआ ग्रहण करना। यह बहुत स्थूल है। यदि व्यक्ति स्थूल पर स्थिर हो जाए तो सूक्ष्म में प्रवेश नहीं हो पाता। महावीर जिस धरातल पर अदत्त की बात कहते हैं, वह बहुत सूक्ष्म है। इस जगत् में हमारा क्या है? अस्तित्व के अतिरिक्त सब कुछ पराया है। अस्तित्व की उपलब्धि के अभाव में चोरी से बचना कैसे संभव हो? दूसरों का क्या मानव अनुकरण नहीं करता? उसके पास जो कुछ है वह सब अनुकृत है, उधार लिया हुआ है। यदि ठीक से हम अपने पर दृष्टिपात करें तो पता चलेगा कि हमारी सारी शिक्षा-दीक्षा, संस्कार आदि परंपरागत हैं। अचौर्य व्रत के अभ्यास के लिए साधक को बहुत सजग होने की आवश्यकता होगी। उसे प्रतिक्षण पैनी दृष्टि से देखना होगा कि मेरा अपना क्या है और पराया क्या है? मैं दूसरों की चीजों को अपनी कैसे मान रहा हूँ। जब तक वह स्वयं में प्रवेश नहीं करे, तब तक वह उन वस्तुओं और संस्कारों का बहिष्कार करता जाए जो अपनी नहीं है, वह एक दिन अचौर्य को उपलब्ध हो जाएगा।

(क्रमशः)

अवबोध

❑ **मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं'** ❑

(३) चारित्र मार्ग

प्रश्न-१४ : चारित्र में ज्ञान कितने होते हैं?

उत्तर : प्रथम चार चारित्र में दो, तीन, चार ज्ञान हो सकते हैं। यथाख्यात में दो, तीन, चार व एक हो सकता है। चारित्र में क्षयोपशमजन्य अज्ञान नहीं होता।

प्रश्न-१५ : चारित्र में श्रुत ज्ञान कितना हो सकता है?

उत्तर : परिहार विशुद्धि चारित्र वाले जघन्य नौवें पूर्व की तीन आचार वस्तु, उत्कृष्ट कुछ कम दस पूर्व का अध्ययन करते हैं। शेष चार चारित्र जघन्य-आठ प्रवचनमाला, उत्कृष्ट चौदह पूर्व। यथाख्यात चारित्र वाले (केवली) श्रुत व्यतिरिक्त ज्ञान वाले भी होते हैं।

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

❑ **आचार्य महाश्रमण** ❑

आचार्य आर्यरक्षित

(क्रमशः) पूर्वों का अध्ययन करते हुए आर्यरक्षित ने आर्य वज्रस्वामी से पूछा—'भगवन्! अध्ययन कितना अवशिष्ट रहा है?' आर्य वज्रस्वामी गंभीर होकर बोले—'यह प्रश्न पूछने से तुम्हें क्या लाभ है? तुम दत्तचित्त होकर पढ़ते जाओ।' कई दिनों के बाद यही प्रश्न पुनः आर्यरक्षित ने आर्य वज्रस्वामी से पूछा तब वज्रस्वामी ने कहा—'वत्स! तुम सर्षप मात्र पढ़े हो; मेरु जितना शेष पड़ा है। तुम मोहवश पूर्वों के अध्ययन को छोड़ने की सोच रहे हो। यह कांजी के बदले क्षीर को, लवण के बदले कर्पूर को, कुसुम के बदले कुंकुम को, गुंजाफल के बदले स्वर्ण को छोड़ने जैसा है।' गुरु से बोध पाकर आर्यरक्षित पुनः अध्ययन में स्थिर हुए और नवपूर्वों का पूर्ण भाग एवं दसवें पूर्व का अर्धभाग उन्होंने संपन्न कर लिया। अध्ययन के अंतराल काल में आर्य फल्गुरक्षित पुनः-पुनः ज्येष्ठ भ्राता को माता-पिता की स्मृति कराते रहते थे। दृष्टिवाद के अथाह ज्ञान को ग्रहण करने में एक दिन आर्यरक्षित का धैर्य डोल उठा। उन्होंने वज्रस्वामी से निवेदन किया—'आप मुझे दशपुर जाने का आदेश दें, मैं शीघ्र शेष अध्ययन के लिए लौटकर आने का प्रयास करूँगा।' आर्य वज्र ने ज्ञानोपयोग से जाना—मेरा आयुष्य कम है। आर्यरक्षित का मेरे से पुनर्मिलन होना असंभव है। दूसरा कोई व्यक्ति दृष्टिवाद को ग्रहण करने में समर्थ नहीं है। दसवाँ पूर्व मेरे तक ही सुरक्षित रह पाएगा। ऐसा ही सुस्पष्ट दिख रहा है।

आर्य व्रज ने आर्यरक्षित से कहा—'वत्स! परस्पर उच्चावच व्यवहार के लिए 'मिच्छामि दुक्कडं' है। तुम्हें जैसा सुख हो वैसा करो। तुम्हारा मार्ग शिवानुगामी हो। इतना कहकर वज्रस्वामी मौन हो गए। गुरु का आदेश प्राप्त कर उन्हें वंदन कर आर्यरक्षित फल्गुरक्षित के साथ वहाँ से चल पड़े।

संयमपूर्वक यात्रा करते हुए बंधु सहित आर्यरक्षित पाटलिपुत्र पहुँचे। दीक्षाप्रदाता आर्य तोषलिपुत्र से प्रसन्नतापूर्वक मिले एवं उनसे सार्ध नौ पूर्वों के अध्ययन की बात कही। पूर्वधर आर्यरक्षित को सर्वथा योग्य समझकर आर्य तोषलिपुत्र ने आचार्य पद पर उनकी नियुक्ति की।

आर्यरक्षित ने दशपुर की ओर प्रस्थान किया। मुनि फल्गुरक्षित ने आगे जाकर माँ को आर्यरक्षित के आगमन की सूचना दी। ज्येष्ठ पुत्र के दर्शनार्थ उत्कंठित जननी रुद्रसोमा पुत्रागमन की प्रतीक्षा कर रही थी। आर्यरक्षित आ पहुँचे।

बिना सूचना दिए अपने पुत्रों का यह आगमन पिता सोमदेव को अच्छा नहीं लगा। वे चाहते थे दोनों पुत्रों का नगर-प्रवेश भव्य उत्साह के साथ होता। सोमदेव ने विशेष स्वागतार्थ दोनों पुत्रों को नगर के बाह्य उद्यान में लौट जाने को कहा पर आर्यरक्षित ने इस बात को स्वीकार नहीं किया।

पिता सोमदेव का दूसरा प्रस्ताव था—'पुत्र! श्रमणवेश को छोड़कर अपने घर में रहो और रूप-यौवन-संपन्ना योग्य कन्या के साथ महोत्सवपूर्वक श्रौत विधि से विवाह कर परिवार का कुशलतापूर्वक संचालन करो। तुम्हारी माता को भी इससे आनंद प्राप्त होगा। गृहस्थ जीवन की गाड़ी को वहन करने के लिए धनोपार्जन की चिंता तुम्हें नहीं करनी होगी। दशपुर नरेश की कृपा से सात पीढ़ी सुख से रह सके, इतना द्रव्य मेरे पास है।'

अध्यात्म-साधना में रत आर्यरक्षित ने राजपुरोहित पिता सोमदेव को उद्बोधन देते हुए कहा—विप्रवर! आप शास्त्रों का भार ही वहन कर रहे हो। आपने जीवन के यथार्थ को नहीं पहचाना है। जन्म-जन्म में माता-पिता, भ्राता-भगिनी, पत्नी, सुता आदि अनेक बार ये संबंध हुए हैं, इनमें क्या आनंद है? राजप्रसाद को भी भृत्य रूप में रहकर अर्जित किया है। इसमें भी गर्व किस बात का? अर्थ-संपदा अनर्थ की जननी है, बहुत उपद्रवकारिणी है। मनुष्य जन्म रत्न की तरह दुष्प्राप्य है। गृहमोह में फँसकर विज्ञ मनुष्य इसको खोया नहीं करते। मेरा दृष्टिवाद का अध्ययन अभी पूर्ण नहीं हुआ है; मैं यहाँ रुक सकता हूँ? आपका मेरे प्रति सच्चा अनुराग है तो आप भी संयम-पथ का अनुगमन करें।

आर्यरक्षित की धीर-गंभीर वाणी को सुनकर राजपुरोहित परिवार प्रतिबुद्ध हुआ एवं श्रमण धर्म में दीक्षित हुआ। सोमदेव का दीक्षा-संस्कार सापवादिक था। उन्होंने छत्र, जनेऊ, कौपीन एवं पादुका का अपवाद रखा। आर्यरक्षित मुनि सोम को इन अपवादों से मुक्त कर जैन-विहित संयम-विधि में स्थिर करने के लिए प्रयत्नशील बने।

(क्रमशः)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
20 - 26 दिसंबर, 2021

✦ *दूसरों की बातें सुन लो भले पर करो वही जो तुम्हारा विवेक कहे।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

मुनि दर्शन कुमार जी के प्रति आध्यात्मिक उद्गार

अर्हम

● **साध्वी कंचनप्रभा** ●

हर संसारी प्राणी कर्मोदय से आबद्ध है। वे कर्म अपना परिणाम दिखाते ही हैं। आठों कर्मों में वेदनीय कर्म का अपना प्रभाव है। कभी-कभी वेदनीय कर्म इस क्रम उदय में आता है जब मन आहत हो जाता है। वे व्यक्ति अंगुली पर गिने जाने वाले स्मरणीय हो जाते हैं, जो निर्भीक होकर सटीक उत्तर देते हैं। यह चारित्रात्माओं में देखा जा सकता है।

हमारे धर्मसंघ के ऐसे महान संत जिनका कुछ दिन पहले ही प्रयाण हुआ। वे आदरणीय मुनि दर्शन कुमार जी। उनकी सूर्यास्त के बाद कुछ रात्रि होने पर ऐसे इमरजेंसी स्थिति बनी। चिकित्सकों ने निवेदन किया कि आपकी हृदय की स्थिति भयजनक है, इसलिए आपको अभी का अभी हॉस्पिटल जाना चाहिए। अन्यथा रात्रि में कुछ भी हो सकता है। मुनि दर्शन कुमार जी ने अति दृढ़ता के साथ उत्तर दिया कि अगर रात्रि में कुछ हुआ तो मेरा औदारिक शरीर श्मशान जाएगा तथा सूर्योदय हुआ तो हॉस्पिटल। जो होना होता है वही होता है। रात्रि में ही उनका प्रयाण हो गया। ऐसे महान संत थे मुनि दर्शन कुमार जी। जिनको परमपूज्य आचार्यप्रवर के सान्निध्य में भीलवाड़ा चातुर्मास का लाभ मिला।

मुनिश्री ने धर्मसंघ प्रभावना में अच्छा श्रम किया। विभिन्न प्रांतों की यात्राओं में श्रावक समाज की सार-संभाल की। उनकी कविताएँ भी विचित्र होती। परमपूज्य भिक्षु स्वामी तथा उत्तरवर्ती सभी आचार्यप्रवर परमपूज्य गुरुदेवश्री जुलसी-जिनके करकमलों से दीक्षित हुए तथा परमपूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी तथा वर्तमान में महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी के प्रति सर्वात्मना समर्पित रहे।

मुनि दर्शन कुमार जी की स्मृति सभा

नंजनगुड़।

साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि साधुत्व की भावना से मुमुक्षु गुरु चरणों में आजीवन समर्पित हो जाता है। गुरु की सशक्त शरण में श्रद्धा को पुष्ट करता हुआ यह विकास-पथ पर अभिनिष्क्रमण करता है। सेवा, मर्यादा, व्यवस्था आज्ञा और अनुशासन का परकोटा इस संघ के हर सदस्य की सुरक्षा करता है। साध्वीश्री जी ने कहा कि संघ में दीक्षित होने वाला आत्मकल्याण और जनकल्याण करता है। मुनि दर्शन कुमार जी एक संघप्रभावक तत्त्वज्ञानी संत थे। उन्होंने प्रचार-प्रसार के द्वारा संघ सेवा की। अंतिम चातुर्मास सौभाग्य से गुरुकुलवास में हुआ। वे एक कर्मठ, सरल पुरुषार्थी संत थे, साध्वी चंद्रिकाश्री जी भी वर्षों तक गुरु चरणों में साधनारत रही। दोनों दिवंगत आत्माओं का आध्यात्मिक विकास होता रहे। जन्म और मृत्यु शाश्वत सत्य है। इन दोनों के बीच का समय हमें अध्यात्म की दिशा में नियोजित करना चाहिए।

उन्होंने आचार्यश्री तुलसी, आचार्यश्री महाप्रज्ञ और वर्तमान आचार्यश्री महाश्रण जी के शासन काल में अनेक यात्राएँ की। धर्म शासन के गौरव को बढ़ाया। साध्वी सिद्धियशा जी ने भगवान महावीर की वाणी का रसास्वादन करवाया। साध्वीश्री जी के सान्निध्य में श्रावक परिवार की परिचय संगोष्ठी ज्ञान-विज्ञान चर्चा का आयोजन किया गया।

आचार्य महाश्रमण फिजियोथैरेपी सेंटर

रायपुर।

अभातेममं का उपक्रम आचार्य महाश्रमण फिजियोथैरेपी सेंटर जिसका संचालन रायपुर महिला मंडल द्वारा किया जा रहा है के, नूतन स्थानांतरित स्थान देवेंद्र नगर पर जैन संस्कार विधि से शुभारंभ पूजन कराने का सु-अवसर तेयुप, रायपुर को प्राप्त हुआ।

संस्कारक सूर्यप्रकाश बैद ने पूरे विधि-विधान से मंत्रोच्चार के साथ विधि संपन्न कराई। पूजन में महिला मंडल सदस्याओं के साथ सभा अध्यक्ष सुरेंद्र चौरड़िया, महिला मंडल अध्यक्षा सरिता सेठिया, मंत्री नेहा जैन, तेयुप अध्यक्ष वीरेंद्र डागा, मंत्री गौरव दुगड़ के साथ स्थानीय रहवासियों की उपस्थिति रही।

मेधावी छात्र सम्मान समारोह

हैदराबाद।

साध्वी मधुस्मिता जी एवं साध्वी काव्यलता जी के सान्निध्य में टीपीएफ द्वारा तेरापंथ भवन डीवी कॉलोनी में मेधावी छात्र सम्मान समारोह का आयोजन हुआ। साध्वी मधुस्मिता जी ने कहा कि मेधा का अर्थ है जो धारण करने में सक्षम होता है, उस बुद्धि का नाम मेधा है। आज टीपीएफ संगठन के द्वारा मेधावी छात्र-छात्राओं को प्रोत्साहित एवं पुरस्कृत कर समाज में उनकी एक नई पहचान बनाई है। साध्वीश्री जी ने टीपीएफ, हैदराबाद अध्यक्ष मोहित बैद एवं साध्वी काव्यलता जी के आत्मीय सहयोग की मूल कंठ से सराहना की।

साध्वी काव्यलता जी ने कहा कि आज मेधावी छात्र सम्मान का विशिष्ट आयोजन उत्साह, संकल्प एवं श्रमनिष्ठा का प्रतीक है। मेधावी छात्र-छात्राओं को चार प्लेटफार्म से गुजरना होगा। वे प्लोटफार्म है—विनयशीलता, श्रमशीलता, गतिशीलता, कार्यश्रेष्ठा। अगर ये चार आदर्श तुम्हारे जीवन में आ जाएँ तो मेधावी छात्र बनने का सपना सफल बन सकता है। कार्यक्रम का शुभारंभ अणुव्रत सुराणा, धीरज ललवानी एवं सुमित बैद द्वारा टीपीएफ गान के मंगलाचरण से प्रारंभ हुआ।

टीपीएफ, हैदराबाद अध्यक्ष मोहित बैद ने सभी का स्वागत किया एवं साध्वीवृंद के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। टीपीएफ राष्ट्रीय सहमंत्री ऋषभ दुगड़ ने टीपीएफ के विविध आयामों की जानकारी दी। तेरापंथ सभा सिकंदराबाद अध्यक्ष सुरेश सुराणा ने समस्त संस्थाओं की ओर से टीम को शुभकामनाएँ दी। तत्पश्चात समस्त साध्वीवृंद ने मधुर स्वर में गीत का संगान किया।

इस कार्यक्रम में वर्ष २०२१ में दसवीं एवं बारहवीं कक्षा में ८५ प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों का सम्मान सार्टिफिकेट एवं मेडल द्वारा किया गया। इसके अंतर्गत लगभग ३२ विद्यार्थियों का सम्मान किया गया। इसमें आचार्य तुलसी स्वर्ण पदक, आचार्यश्री महाप्रज्ञ स्वर्ण पदक, आचार्यश्री महाश्रमण स्वर्ण पदक, रजत पदक एवं कांस्य पदक, कुल ५ वर्ग थे जो प्रतिशत के आधार पर केंद्र द्वारा निर्धारित किए गए थे।

मेधावी छात्र-छात्राओं को सम्मानित करने टीपीएफ राष्ट्रीय सहमंत्री ऋषभ दुगड़, राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष नरेश कठोतिया, आर्गेनाइजेशन डेवलपमेंट नेशनल प्रोजेक्ट चेयरमैन नवीन सुराणा, साउथ जोन मंत्री रक्षिता बोहरा, हैदराबाद शाखा अध्यक्ष मोहित बैद सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की गरिमामय उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का संयोजन सहमंत्री अणुव्रत सुराणा एवं निखिल कोटेचा ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में टीपीएफ सदस्य सहमंत्री पुनीत दुगड़, श्वेता मेहता, पायल सुराणा, सुमित बैद, यश बागरेचा एवं अर्हम बेंगाणी ने विशेष सहयोग प्रदान किया। कार्यक्रम में स्थानीय श्रावकों की काफी अच्छी संख्या में उपस्थिति रही। टीपीएफ, हैदराबाद उपाध्यक्ष धीरज ललवाणी ने आभार ज्ञापन किया।

चारित्रात्माएँ आध्यात्मिक चेतना जागृत करते हैं

राजाराजेश्वरी नगर।

शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी राजाराजेश्वरी नगर चातुर्मासिक प्रवास की संपन्नता के बाद विहार करते-करते केंगेरी पधारे। साध्वीवृंद को अपने क्षेत्र में पाकर पूरा श्रावक समाज हर्षोल्लासित था। केंगेरी प्रवासी गांधीनगर, बैंगलोर तेरापंथ सभा के अध्यक्ष सुरेश दक ने साध्वीवृंद के पदार्पण के उपलक्ष्य में अभिनंदन करते हुए कहा कि आज हम अपने प्रांगण में आपको देखकर भाव-विभोर हैं, भक्ति प्रणत भावों से अभिनंदन करते हैं। आपका चौथी बार यहाँ शुभागमन हुआ है। आपके निर्देशन में हमारा ज्ञानशाला परिवार विकास कर रहा है।

आरआर नगर तेरापंथ सभा अध्यक्ष मनोज डागा, तेयुप अध्यक्ष सुशील भंसाली, तेमम से प्रचार-प्रसार मंत्री पूनम दक सभी ने साध्वीवृंद के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए अपने विचार रखे।

शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी ने कहा कि चारित्रात्माएँ प्रतिस्रोतगामी होते हैं। चार महीना एक जगह संवास होता है बाकी आठ महीना विहार यात्रा से जन-जन को आत्मराधना से कल्याणकारी संदेश प्रदान कर उनका उद्धार करते हैं।

शासनश्री साध्वी मंजुरेखा जी ने कहा कि यहाँ के शासन भक्त सभी परिवारों ने राजराजेश्वरी नगर में हमारे चातुर्मास में अप्रमत्त होकर ज्ञान-दर्शन व तप की साधना में जागरूकता दिखाई। राजराजेश्वरी नगर से बड़ी संख्या में तेरापंथ सभा, तेयुप व महिला मंडल के पदाधिकारी एवं सदस्यगण, विजयनगर तेयुप से महेंद्र टेबा आदि पद-विहार यात्रा में संभागी थे। उम्मेद गोलछा ने भी विचार रखे।

एकाह्निक तुलसी-शतकम्

मुनि सिद्धकुमार

(क्रमशः)

(६०) परन्तु मम संकल्पो, भूत्वाऽहं च भवद्समः।
द्रक्ष्यामीति भवन्तं यद्, भवानासीत्, कियान् महान्।।
परंतु यह मेरा संकल्प है कि मैं आपके समान गुणवान् बनकर देखूँगा कि आप कितने महान् थे।

(६१) भवान् प्रत्यक्षरूपेण, विद्यमानस्तु किन्तु नो।
भवतोष्टा स्वछायाऽस्यां, पृथिव्यामेव चोत्सुका।।
आप भले ही प्रत्यक्ष रूप से विद्यमान नहीं है, परंतु आपने इस पृथ्वी पर अपनी उत्सुक छाया को हमारे लिए यहीं छोड़ दिया।

(६२) सा छायाऽस्ति महात्मानो श्रीमहाश्रमणस्य हि।
आकार ज्ञानमत्याङ्गादयः सर्वभवद्समः।।
वह छाया है परम पूज्य महात्मा महाश्रमण की, जो आकार से, ज्ञान से मति से और शरीर से भी आपके ही समान है।

(६३) अन्यान्यविस्मयेष्वेव, याऽस्ति महद्विशेषता।
यद् भवन्तौ महान्तौ च, झूमरनंदना उभौ।।
अन्यान्य आश्चर्यों में जो सबसे बड़ी विशेषता है वह यह है कि आप दोनों ही झूमरनन्दन है।

(६४) अहं स्वर्गादपीक्षिष्येऽवादीत् भवान् स्वकां कृतिम्।
कथमनुभवन् द्रष्ट्वा, भवन्तः भवतः कलाम्।।
आपने अपने कृति आचार्यश्री महाश्रमण को कहा था कि "मैं तुम्हें स्वर्ग से भी देखूँगा।" तो आप अपनी कला को देख कैसा अनुभव कर रहे हैं?

(६५) भवन्ती पुनरावृत्तिः, कार्याणां भवतो यतः।
प्रकरिष्यति नम्रस्तु, शिष्योऽनुसरणं गुरोः।।
आपके कार्यों की पुनरावृत्ति हो रही है, क्योंकि विनम्र शिष्य तो गुरु का ही अनुसरण करेगा।

(६६) पदायापि द्विवर्षस्य, विवदन्ति परस्परम्।
त्यक्तं सहजरूपेण, वर्षाणां तु पदं कथम्।।
लोग द्विवर्षीय पद के लिए भी झगड़ते हैं, तो आपने अपने ५७ वर्षों के पद को इतनी सहजतया कैसे तज दिया?

(६७) प्रतिष्ठा च पदं सर्वाद् भयङ्करं च मादकम्।
किन्तु सर्वप्रपञ्चाया, भवान् मुक्तोऽभवत् कथम्।।
प्रतिष्ठा और पद दुनिया के सबसे खतरनाक और नशीली चीजें हैं, किंतु आप इन प्रपंचों से कैसे मुक्त रहे?

उपसंहार

(६८) न शब्देषु तु भावेषु, काव्यस्य महनीयता।
अतो भावान् प्रगृह्न्तु, कोविदान् मे निवेदनम्।।
काव्य की महनीयता शब्दों में नहीं भावों में होती है, अतः विज्ञों से मेरा निवेदन है कि वे भावों को ग्रहण करें।

(६९) द्विशैलपूर्णनासत्ये, द्वितीये शुक्लकार्तिके।
शतकैकाह्निकं पूर्णं, जातमस्मिन् शुभे दिने।।
वि०सं० २०७७, कार्तिक शुक्ला द्वितीया के दिन मैंने यह एकाह्विक (एक ही दिन में बनाया गया) शतक पूर्ण किया।

(१००) मयादर्शतुलसीजन्मदिवे वाशीनिवेशने।
सिद्धेन रचितं काव्यं, तुलसीशतकं शुभम्।।
मेरे आदर्श गणाधिपति श्री तुलसी के जन्मदिवस पर वाशीनगर में मुनि सिद्ध कुमार 'क्षेमंकर' (मेरे) द्वारा रचित यह तुलसी-शतकम्।

(समाप्त)

साध्वी चंद्रिकाश्री जी के प्रति आध्यात्मिक उद्गार

अर्हम्

● **साध्वी मधुस्मिता** ●

मुहूर्त ज्वलितं श्रेयं न च धूमामितं चिरं - इस उक्ति को चरितार्थ करने वाली साध्वी चंद्रिकाश्री जी ने जागरूक जीवन जीकर अपने गुण सुमनों की खुशबू संघ सदन में बिखेरी। गुरुकुलवास में रहकर अपने सौभाग्य सूर्य को चमकाया। अपने साझपति शासनश्री जिनप्रभा जी की मनोनुकूल सेवा करके तथा वर्ग के प्रति दायित्वशील रहकर उनको निश्चिंत बनाया। स्वयं तत्त्वज्ञान में निष्णात बनी। दूसरों को समझाने की कला में कौशल प्राप्त कर अनेक बहनों एवं साध्वियों को भी लोक की शेर कराने में दक्षता हासिल की। वे किसी भी कार्य को स्फूर्ति के साथ संपादित करने में समर्थ एक कलाकार साध्वी थी। उनकी पुण्याई प्रबल थी, जिसकी बदौलत असाध्य बीमारी में पूज्यप्रवर की महर नजर से उनकी सेवा परिचर्या अहोभाव से की गई। भयंकर कष्ट के क्षणों में समभाव की साधना कर उन्होंने सुख शय्या में शयन किया। अपनी विनम्र प्रकृति के कारण उनकी आत्मा ऊर्ध्वारोहण करती हुई चिर शांति को प्राप्त करें।

अर्हम्

● **साध्वी काव्यलता** ●

तेरापंथ धर्मसंघ एक नंदन वन है। चित्त समाधि का रमणीय उपवन है। इस उपवन का हँसता खिलता एक पुष्प था। साध्वीश्री चंद्रिकाश्री जी जो एक कला प्रिय, स्वाध्याय प्रिय, श्रमशील, मिलनसार साध्वी थी। वे भाग्यशाली थी जिन्हें निरंतर गुरु सन्निधि में रहने का दुर्लभ अवसर प्राप्त हुआ।

शासनश्री साध्वी जिनप्रभा जी के तन के कपड़े की तरह, छाया की तरह रहकर उनके हर कार्यों में सदा सहयोगी बनी रही। उनके रहने से साध्वीश्री जी तो निश्चिंत थी पर साथ वाली सभी साध्वियाँ भी निश्चिंत थीं। उनका व्यवहार बड़ा मधुर था। तत्त्व ज्ञान में विशेष रुचि रखने के कारण सैकड़ों-सैकड़ों युवती बहनों को तत्त्व ज्ञान से जोड़ा।

साधु जीवन में काम आने वाली कलात्मक चीजों का निर्माण भी बड़ी सफाई से करती। उनका बाह्य व्यक्तित्व भी अच्छा था। चैन्नई गुरुदेव के चातुर्मास में मैंने उन्हें निकटता से देखा वे अपने दायित्व के प्रति बड़ी जागरूक साध्वी थी। साध्वी चंद्रिकाश्री जी ने आने वाली असाध्य बीमारी को समता से सहन किया। साध्वी समाज के लिए एक आदर्श प्रस्तुत कर उन्होंने अपने मरण को ज्योतिर्मय बना लिया। उनकी आत्मा शीघ्र ऊर्ध्वारोहण को प्राप्त करें, यही काम्य है।

अर्हम्

● **साध्वी पुष्यप्रभा** ●

जन्म के साथ ही व्यक्ति महायात्रा के महापथ पर यात्रायित हो जाता है। यात्रा के इसी दौर में साध्वी चंद्रिकाश्री जी की साध्वी दीक्षा और मेरी समणी दीक्षा बीकानेर में साथ में हुई। दीक्षा दिन पर जब मैं उन्हें वंदना करने जाती तो वही हमेशा यही कहती आप मुझे वंदना मत किया करो हम तो सहदीक्षित हैं। हम अपनी रजत जयंती साथ में मनाएँगे।

साध्वी दीक्षा के कुछ साल बाद मुझे थॉयराइड हो गया। डॉक्टर ने दवा लेने का परामर्श दिया। किंतु चंद्रिकाश्री जी यही कहते आप दवा शुरू मत करो। नियमित व्यायाम व अनुप्रेक्षा से धीरे-धीरे ठीक हो जाएँगी। शायद उनके कहने का ही परिणाम था कि मेरी थॉयराइड बिना दवा के ठीक हो गई।

जीवन एक सुंदर कविता ही नहीं बल्कि एक लंबी कहानी है, जिसकी प्रत्येक किश्त महत्त्वपूर्ण होती है। व्यक्ति अपने गुणों के सौंदर्य से इसे सजाता है, सँवारता है किंतु जीवन में घटित होने वाली घटना को रोका नहीं जा सकता। साध्वी चंद्रिकाश्री जी के जीवन में घटित होने वाली अनायास घटना से एक बोध पाठ प्रस्तुत कर दिया। उनकी आत्मा हमेशा आध्यात्मिक विकास पर आरोहण करती रहे, यही मंगलकामना।

अर्हम्

● **साध्वी राजीमती** ●

जीवन में अनेक व्यक्तियों से मिलना होता है, परंतु कुछ ऐसे व्यक्ति होते हैं, जो अपनी छाप छोड़ जाते हैं। साध्वी चंद्रिकाश्री जी वैसी ही एक साध्वी थी। लाडनूं चातुर्मास सन् २०१४ में एक छोटा सा परिचय हुआ, कुछ सुना, कुछ जाना कि ये एक कर्मठ, कलाकार, पुरुषार्थी, सेवाभावी साध्वी थी और अच्छी गायिका भी।

जन्म लेते समय तो सभी कोरे कागज की तरह आते हैं पर जाते समय उस कागज पर अपनी पूरी कहानी लिखकर जाते हैं।

साध्वी चंद्रिकाश्री जी ने जीवन कहानी लिखते-लिखते कहानी का अंतिम पेराग्राफ बहुत प्रेरक बना दिया। क्योंकि उन्होंने अपनी बीमारी के साथ एक सात्त्विक लड़ाई लड़ी और उसमें विजयी बनी।

● वे पुण्यात्मा थी संयमरत्न मिला। ● वे पुण्यात्म थी आचार्यों की सेवा का ऐसा सुयोग मिला। ● वे पुण्यात्मा थी साध्वीप्रमुखाश्री जी का शुभ सान्निध्य और शासनश्री साध्वी जिनप्रभाजी का संरक्षण मिला। ● तेरापंथ धर्मसंघ की एक अच्छी साध्वी, अच्छी संयम यात्रा संपन्न करके विदा हो गई।

उस आत्मा के ऊर्ध्वारोहण के लिए मंगलकामना।

अर्हम्

● **साध्वी सुमतिप्रभा** ●

किसी विचारक ने लिखा है—जिंदगी से आप जो भी बेहतर से बेहतर ले सको, ले लो, क्योंकि जब जिंदगी लेना शुरू करती है तो साँसें भी नहीं छोड़ती।

साध्वी चंद्रिकाश्री जी ने संयम-जीवन को स्वीकार कर अपनी जिंदगी से सबसे बेहतर चीज ले ली। इस दुर्लभ मानव जीवन को उन्होंने सार्थक बना लिया। शासनश्री साध्वी जिनप्रभा जी के संरक्षण में लगभग साढ़े पाँच वर्षों तक हमें साथ रहने का अवसर मिला। वे एक कर्मठ साध्वी थी। मात्र पंद्रह वर्षीय साध्वी जीवन में उन्होंने साधुचर्या के अनेक काम सीख लिए। उनमें कार्य करने का हौसला था, जज्बा था। जब कभी मेरे सामने साधु-साध्वियों की भक्ति करने का प्रसंग आता तो वे बड़े उत्साह के साथ आगे होकर कार्य करती थी। तत्त्वज्ञान के क्षेत्र में उनकी अच्छी पकड़ थी और दूसरों को समझाने की शैली भी अच्छी थी। गीत-गायन में मधुरता तो प्रारंभ से ही थी, इन वर्षों में तो गीत-रचना भी सुंदर करती थी। सब कुछ अच्छा चल रहा था, अचानक असाध्य रोग ने जकड़ लिया। इतनी विकट स्थिति में भी उन्होंने बहुत समता भाव रखा। बढ़ते-चढ़ते परिणामों के साथ उनकी संयम यात्रा संपन्न हुई। मैं उनके भावी आध्यात्मिक विकास की मंगलकामना करती हूँ।

रूपांतरण थ्रू जैनिज्म तथा कषाय कार्यशाला

राउरकेला।

अभातेमम के निर्देशानुसार राउरकेला महिला मंडल द्वारा दो कार्यशालाओं का आयोजन एक साथ किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नवकार मंत्र से हुआ। फिर सरिता और अंकिता कोचर ने प्रेरणा गीत के द्वारा मंगलाचरण किया। तत्पश्चात अध्यक्ष सरोज गोलछा ने सभी बहनों का स्वागत किया और मंडल के आगामी कार्यक्रमों की संक्षिप्त जानकारी दी साथ ही मंडल की बहनों को सभी कार्यक्रम में जागरूक रहने की प्रेरणा दी।

रूपांतरण थ्रू जैनिज्म : रूपांतरण का पहला स्टेशन श्री जिसका विषय है—मेक योअर लाइफ हैप्पी थ्रू अनेकांतवाद के अंतर्गत मंडल की बहन प्रेरणा जैन और नेहा कोठारी ने अनेकांतवाद को सुंदर तरीके से उदाहरण सहित समझाया। दूसरा विषय था—कषाय जिस पर मंडल की युवा बहन सुरभि बोथरा ने चारों कषाय के बारे में छोटी-छोटी कहानियों द्वारा अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया और भाग्यश्री दुगड़ ने चारों कषाय से किस प्रकार बचा जा सके यह बताया।

आभार ज्ञापन सहमंत्री कविता डागा ने किया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री बिनीता जैन ने किया। साथ ही बहनों की जिज्ञासाएँ थीं उनका भी समाधान दिया।

तेयुप के विविध कार्यक्रम

बायोकेमिस्ट्री एवं एंटोलॉजी मशीन का शुभारंभ

विजयनगर।

आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक के अंतर्गत मागडी रोड स्थित सेंटर में माइक्रोबायोलॉजी सेक्शन बायोकेमिस्ट्री एवं एंटोलॉजी मशीन का शुभारंभ जैन संस्कार विधि के द्वारा अभातेयुप के राष्ट्रीय महामंत्री पवन मांडोत के द्वारा किया गया।

सर्वप्रथम परिषद अध्यक्ष अमित दक ने सभी का स्वागत किया एवं एटीडीसी के लिए आगामी तीन माह की रूपरेखा पर विचार-विमर्श किया। इस अवसर पर अभातेयुप परामर्शक विमल कटारिया ने अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा कि देश की पहली एटीडीसी का शुभारंभ विजयनगर में हुआ एवं अब तक देश भर में ६७ एटीडीसी की शुरुआत हो चुकी है।

अभातेयुप प्रबुद्ध विचारक दिनेश पोखरणा ने कहा कि तेयुप, विजयनगर ने सेवा में एक नया मुकाम हासिल किया है। अभातेयुप राष्ट्रीय महामंत्री पवन मांडोत ने कहा कि विजयनगर परिषद शानदार कार्य कर रही है।

इस अवसर पर जैन संस्कार विधि के सह-संयोजक राहुल सेठिया एवं देवांग बैद ने जैन संस्कार विधि से इस कार्यक्रम को संपादित करवाया। परिषद से अभातेयुप समिति सदस्य महावीर टेबा, उपाध्यक्ष प्रवीण गन्ना, मंत्री विकास बांठिया, कोषाध्यक्ष राकेश पोखरणा, संगठन मंत्री दीपक भूरा एवं एटीडीसी स्टॉफ संतोष आदि उपस्थित रहे। अंत में आभार सहमंत्री कमलेश चोपड़ा ने किया।

ओल्ड एज होम में सेवा कार्य

विजयनगर।

गांधी ओल्ड एज होम में स्वर्गीय शंकरलाल मारू की २७वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में रोशनलाल पारसमल अशोक मारू आमदला-बैंगलोर द्वारा सुबह का नाश्ता का कार्यक्रम रखा गया।

परिषद अध्यक्ष अमित दक ने सभी का स्वागत किया एवं सेवा कार्य टीम के प्रति मंगलकामना व्यक्त की। तेयुप द्वारा सेवा के उपक्रम के अंतर्गत आयोजित इस कार्यक्रम में परिषद से अध्यक्ष अमित दक उपाध्यक्ष मनोज बरड़िया एवं मारू परिवार से अशोक मारू, राकेश एवं सोनू आदि पारिवारिकजन उपस्थित थे। सहयोगी परिवार का आभार व्यक्त किया। गांधी ओल्ड एज होम के संचालक ने परिषद के इस कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

आश्रम में स्टीम बर्तन एवं सामग्री भेंट

लिलुआ।

लाल बाबा आश्रम, बेलुड़ क्षेत्र में छोटे बच्चों, किशोर एवं आश्रम में साधुओं की सेवा की शुरुआत महामंत्र से की गई। सेवा में चॉकलेट, बिस्किट, मिठाई एवं अल्पहार करवाया गया और लाल बाबा आश्रम के प्रधान सेवक गुरुप्रसाद महाराज को मंगलभावना पत्र एवं जरूरत के हिसाब से स्टील बर्तन सामग्री भेंट की गई। तेयुप अध्यक्ष विकास पुगलिया, उपाध्यक्ष-प्रथम अमृत बाफना उपाध्यक्ष-द्वितीय विकास विनायकिया एवं युवा साथियों का श्रम सराहनीय था। स्टील बर्तन के प्रायोजक थे राकेश श्यामसुखा, सादुलपुर निवासी हावड़ा प्रवासी।

सेवा कार्य में पूरी तेयुप टीम उपस्थित थी।

एबिलिटी इज एब्सोल्यूट

साउथ हावड़ा।

अभातेयुप निर्देशित तेयुप साउथ हावड़ा के सहयोग से तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा Ability is absolute के अंतर्गत International Day of Person With Disability के तहत नव ज्योति फाउंडेशन के श्री शीतला विद्यालय में सेवा कार्य किया गया। जहाँ लगभग ५१ बच्चों में पाठ्य सामग्री के साथ मिठाई, नमकीन, फल आदि बाँटा गया। अध्यक्ष बीरेंद्र बोहरा ने सबका स्वागत करते हुए इस कार्यक्रम की जानकारी दी।

कार्यक्रम का आयोजन किशोर मंडल पर्यवेक्षक एवं सहमंत्री-द्वितीय राहुल दुगड़ की देख-रेख में हुआ। किशोर मंडल के संयोजक संजोग पारख ने सभी बच्चों को नमस्कार महामंत्र का सामूहिक संगान कराते हुए कार्यक्रम का शुभारंभ किया। कार्यक्रम में उपाध्यक्ष ज्ञानमल लोढ़ा, मंत्री गगन दीप बैद, सहमंत्री अमित बेगवानी सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही। फाउंडेशन के सदस्य संजीत सिंह ने किशोरों द्वारा किए गए कार्य की प्रशंसा की। उपस्थित सभी का आभार किशोर मंडल के प्रभारी भानुप्रताप चोरड़िया ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
20 - 26 दिसंबर, 2021

✦ *यदि व्यक्ति स्वस्वरूप में रहता है तो उसका मस्तिष्क आत्मांगण बन जाता है। जो व्यक्ति भीतर रहने का अभ्यासी होता है, वह दुःख से बच जाता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

साध्वी चंद्रिकाश्री जी के प्रति आध्यात्मिक उद्गार

गाथा आत्मबल की

❐ साध्वी प्रबुद्धयशा ❐

'साध्वी चंद्रिकाश्री जी' इस नाम के साथ ही मानस पटल पर एक दृढ़ मनोबली, उत्साही, श्रमशील, जिम्मेदार और भक्तहृदया साध्वी का रेखाचित्र उभर आता है। उनके जीवन में मैंने अनेक विलक्षणताओं का दर्शन किया। उनके भीतर अपने आराध्य के प्रति अप्रकंप श्रद्धा थी तो सिद्धांत और तत्त्व को समझने के लिए बेजोड़ तर्क क्षमता। वे शहरी परिवेश में पली-पुसी पर भौतिकता के प्रति बिलकुल भी आकर्षण नहीं था। वे शरीर से सुंदर और सुकोमल थी पर श्रम में जुझारू। वे संवेदनशील स्वभाव वाली थी पर परिस्थितियों को शौर्य और पराक्रम के साथ झेलती थी। वे अवस्था से युवा थी पर अनुभवों से प्रौढ़। वे प्रायः नए उपकरणों का उपयोग नहीं करती, पर जीवनशैली में नवीनता थी। एक ओर उनमें संकोचवृत्ति थी तो दूसरी ओर स्वाभिमान की सुरक्षा के लिए रजपूती खून। उनके मन में गुणों के प्रति प्रमोद भाव और उपकारी के प्रति अत्यंत कृतज्ञभाव रहता। उनके कार्यों में स्वच्छता और स्फूर्ति दोनों का समवाय था। उनकी चेतना अध्यात्म से भावित थी अतः वे संघर्षों से अप्रभावित रही।

दीक्षा लेने के बाद मुझे उनके साथ बहुत करीबी से रहने का मौका मिला। वे हमारे वर्ग की जिम्मेदार साध्वी थी। वे बड़ी कुशलता से जिम्मेदारियों का निर्वहन करतीं। वे मेरे लिए एक रत्नाधिक साध्वी थी और उन्होंने मुझे हमेशा हर दृष्टि से निश्चिंत रखा। वे मेरे स्वास्थ्य का ध्यान रखती तो मानसिक प्रसन्नता और चित्त समाधि में भी योगभूत बनी रहती। उन्होंने मुझे साधुचर्या के कार्य तो सिखाए ही, साथ ही साथ दक्षता हासिल करने के लिए संप्रेरित भी किया। जब भी उनके पास तत्त्वज्ञान संबंधी जिज्ञासाएँ रखतीं तो वे सटीक और प्रामाणिक समाधान देती। वे स्वयं की साधना और विकास तथा जिनप्रभाजी महासतियांजी की सेवा, समाधि, स्वास्थ्य आदि के साथ-साथ मेरे जीवन-निर्माण के लिए भी बहुत प्रयत्नशील थी। चैन्ने चतुर्मास में जब 'महाप्रज्ञ श्रुताराधना पाठ्यक्रम' की योजना आई तब उन्होंने कहा—'प्रबुद्धयशाजी! तुमको तो यह पाठ्यक्रम करना ही है। मेरी मानसिकता स्वतंत्र अध्ययन करने की थी परीक्षाओं में आबद्ध होने की नहीं। पर उनकी इच्छाशक्ति दृढ़ थी अतः उन्होंने मुझे पाठ्यक्रम से जोड़ ही दिया। उन्होंने मुझे केवल जोड़ा ही नहीं वे स्वयं ही अध्ययन सामग्री की व्यवस्था करती। मुझे अध्ययन के लिए पूरा अवकाश देती। मेरे अध्ययन की पूरी जानकारी रखती और समय-समय पर टेस्ट भी लेतीं। प्रायः वे मेरी हर क्रिया का बारीकी से ध्यान रखती। वे जहाँ मुझे अच्छाइयों के लिए प्रोत्साहित करती वहीं छोटी से छोटी गलती पर अंगुली निर्देश करने से भी नहीं चूकती। जब कभी वे मुझे आलस्य या प्रमाद में देखती तो कोई न कोई लक्ष्य दे देती। वे मेरे गीत और भाषण की बहुत अच्छी समीक्षा करती और उपयोगी सुझाव देती। एक सहवर्ती साध्वी के विकास के लिए इतना प्रयत्न करना, उनकी उदारता का परिचायक है।

साध्वी चंद्रिकाश्री जी ने अपने जीवन को अनेक गुणों से सजाया, संवारा और उत्साह तथा उपलब्धि के साथ जीया। हम प्रायः प्रतिदिन 'तेरापंथ प्रबोध' का संगान करते। जब 'मन की मजबूती कर देखे वो पार हो' इस पंक्ति को गाते तब उनकी भावभंगिमा में एक अलग ही जोश देखने को मिलता। लगभग साढ़े नौ वर्षों में मैंने अनुभव किया उनका मनोबल विलक्षण था। दीक्षा से पूर्व अपने संसारपक्षीय पिताजी श्री विजयराजजी मरलेचा को संथारे का प्रत्याख्यान करवाना उनके मनोबल का अद्भुत उदाहरण है।

विहारों में आँधी हो या वर्षा, प्रचंड धूप हो या लंबा रास्ता कंधों पर बोझ हो या साधन चलाना हो, घने जंगल हों या पहाड़ी खाइयाँ, संकीर्ण गलियों में पशुओं का भय हो या विशाल राजपथ पर वाहनों की आवाजाही, वे बड़ी निर्भीकता और आनंद के साथ कदम बढ़ाती थी। जब हम उनकी चिकित्सा की दृष्टि से मुंबई में थे तब एक बार रात्रि में उनका ब्लड प्रेशर बहुत ज्यादा घट गया। स्थिति गंभीर थी, खतरे से खाली नहीं थी। डॉक्टर और ज्ञातिजनों ने बलपूर्वक उनको कहा—साध्वीश्री जी! आप प्रायश्चित्त ले लेना, पर अभी आपको गोली लेनी जरूरी है, अन्यथा कुछ भी अनहोनी घटित हो सकती है। साध्वी चंद्रिकाश्री जी ने उस समय पूरी दृढ़ता और शक्ति के साथ कहा—भले कुछ भी हो जाए मैं रात्रि में मुँह से गोली आदि कुछ भी नहीं लूँगी। मेरे त्याग है। आप लोग चिंता मत करो। गुरुदेव की कृपा और भिक्षुस्वामी के जाप से सब कुछ ठीक हो जाएगा। हम साध्वियाँ उनके साथ पूरी तन्मयता से जप करने लगीं और लगभग डेढ़-दो घंटे बाद उनका ब्लड प्रेशर सामान्य हो गया। वे हमेशा कहतीं 'यदि हमारे हौंसलों में जान है तो हर मुश्किल आसान है। हमें परिस्थितियों के सामने घुटने नहीं टेकने चाहिए, अपने पुरुषार्थ को चौगुना करना चाहिए।' इसी आत्मबल और मनोबल का परिणाम था कि वे असाध्य बीमारी में भी मुंबई जैसे चिकित्सा क्षेत्र को छोड़कर गुरुचरणों में पहुँच गईं। उनके मनोबल और आत्मबल का मुख्य आलंबन था भिक्षुस्वामी और गुरुदेव पर अटूट श्रद्धा। उन्हें गुरुसन्निधि और गुरुसेवा के साथ जो गुरुकृपा और श्रद्धेया महाश्रमणी जी का जो अपार वात्सल्य प्राप्त हुआ, वह उनके विशेष सौभाग्य का सूचक है। परमपूज्य आचार्यप्रवर द्वारा—

– प्रतिदिन दर्शन देना, मंगलपाठ सुनाना और सेवा करवाना।

– मुनि कीर्तिकुमार जी को उनकी चिकित्सकीय व्यवस्था के संदर्भ में 'फैमिली डॉक्टर' के रूप में नियुक्त करना।

– मुझे गोचरी, पानी आदि सब कार्यों से मुक्त रखकर उनकी सेवा के लिए विशेष रूप से 'परिचारिका' के रूप में नियुक्त करना।

– साध्वी चंद्रिकाश्री जी की सेवाभावना को देखकर उन्हें तीन साल की चाकरी के संघीय ऋण से मुक्त करना।

– दवाई, स्वास्थ्य, जप, स्वाध्याय आदि की बार-बार पृच्छा तथा स्वास्थ्य लाभ के लिए अनुप्रेक्षा करवाना।

– आत्म-कल्याण की दृष्टि से आधा घंटे का आध्यात्मिक कोर्स देना तथा आलोयणा-आराधना आदि करवाकर उनकी भावना को पूर्ण करना परमपूज्य आचार्यप्रवर की असीम कृपा की ही फलश्रुति है। गुरुभक्ति और गुरुशक्ति का ही प्रभाव था कि वे परम समाधि का अनुभव करती रहीं।

साध्वी चंद्रिकाश्री जी का मेरे ऊपर अतिरिक्त उपकार है। मेरे जीवन निर्माण में उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका है। उनका सहवास मेरे लिए चिरस्मरणीय है। वह पवित्र आत्मा जहाँ भी है, आध्यात्मिक समुत्थान करती रहे। अंतहीन कृतज्ञता और शुभाशंसा के साथ-----

व्याधि से भी परम समाधि...कैसे?

❐ साध्वी हेमंतप्रभा ❐

व्यक्ति जन्म लेता है और पीछे अपने व्यक्तित्व की छाप छोड़कर चला जाता है। इस जीवन में आते समय हम क्या लेकर आते हैं यह तो खोज का विषय हो सकता है पर जाते समय हम क्या लेकर जाते हैं यह हमारे परिश्रम का विषय है। इस सुखद परिश्रम के काल में व्यक्ति बहुत सारी परिस्थितियों से जूझता है। वह चलता है, गिरता है, लड़खड़ाता है, ठोकर खाता है पर Ultimately अपने गंतव्य तक पहुँच ही जाता है। हमने भी मेरु जीतना भार अपने कंधों पर उठाया है और उसे लेकर चल भी रहे हैं। अनेक परिस्थितियाँ हमारे सामने भी आती हैं, आधि, व्याधि, उपाधि आदि अनेक स्थितियाँ हैं पर फिर भी हम डटे हुए हैं, जमे हुए हैं।

ऐसी ही शारीरिक व्याधि से जूझते मैंने देखा साध्वी चंद्रिकाश्री जी को। वे बहुत ही सहज, सरल, प्रसन्न और हँसती-खिलती रहने वाली साध्वी थी। बीमारी का आना कोई बड़ी बात नहीं है, बड़ी बात है, उस बीमारी की अवस्था में समताभाव में रहना। उनको देखकर कभी यह नहीं लगा कि उन्होंने वेदना भोगी है। व्याधि आई और उन्हें हमसे दूर कर गई पर वे हमेशा समाधि में रही। बहुधा यही कहती थी कि—'मेरे निकाचित कर्मों का उदय है। कर्म किए हैं तो भोगना भी पड़ेगा।' उनके ये शब्द सुनती तो मेरी भी आँखें भर जातीं। कभी-कभी चिंतन करती हूँ तो लगता है कि हम कर्मों के आगे कितने असहाय हो जाते हैं, चाहकर भी कुछ नहीं कर पाते। लगभग ६ महीने तक क्रमशः जो शारीरिक शक्ति का ह्रास और उनके मनोबल, आत्मबल एवं धृतिबल का विकास देखा, वह आश्चर्यकारी था।

प्रारंभ से लेकर अंत तक जैसे-जैसे शारीरिक पीड़ा बढ़ी वैसे-वैसे उनका मनोबल, आत्मबल, धृतिबल और उससे भी ऊपर उनका गुरुबल उत्तरोत्तर बढ़ता ही गया। मैंने एक दिन भी यह नहीं सुना कि यहाँ दर्द है, यह दुःख रहा है। जब भी पूछा एक ही उत्तर पाया, 'मैं ठीक हूँ, मुझे दर्द नहीं है। इतनी भयंकर व्याधि में भी कहीं कोई दर्द की अनुभूति नहीं हुई और उन्होंने कभी यह व्यक्त किया, मानो प्रत्येक कोशिश 'भिक्षु' शब्द से तरोताजा हो गई हो। यह कैसे हुआ इसका उत्तर तो संभवतः वे दे सकती है। सामान्यतया हम देखते ही हैं कि थोड़ी बहुत बीमारी में भी व्यक्ति ऊपर-नीचे हो जाता है। इस असाध्य रोग की स्थिति में भी इतनी उपशांत चेतना कैसे? यह रहस्य, रहस्य ही बनकर रह गया।

इन सब स्थितियों को देखकर जब चिंतन करती हूँ तो यही समझ में आता है कि जिस व्यक्ति की गुरु भक्ति प्रगाढ़ हो, इष्टबल अडोल हो, मनोबल और आत्मबल मजबूत हो वह व्यक्ति किसी भी स्थिति में हार नहीं मानता। इतनी अलबेली मजबूती मैंने देखी साध्वी चंद्रिकाश्री जी में।

सेवा लेने की भावना उनमें बहुत ही कम थी। पर प्रमोद भावना बहुत अधिक थी। उन्होंने सेवा बहुत कम ली पर फिर भी पूज्य गुरुदेव को वे प्रायः कहती, 'मैं बहुत सेवा ले रही हूँ।' और कहते-कहते उनकी आँखें सजल हो जाती। एक ओर वे धीर, गंभीर थी वहीं दूसरी ओर हम छोटों के साथ सहज और विनोदी भी हो जाती थी। यह उनके व्यक्तित्व का उजला पक्ष था।

इस छोटे से काल में, मात्र पंद्रह वर्ष के अल्प संयम जीवन में उन्होंने जो करतब दिखाया, वह मेरे लिए बहुत प्रेरणादायी है। जीवन के हर क्षेत्र में, चाहे शिक्षा हो, सेवा हो, कला हो, अध्ययन-अध्यापन हो या अन्य कोई भी कार्य हो उन्होंने अपनी विशिष्ट पहचान बनाई। प्रायः सब कार्यों में दक्षता हासिल की। यह उनके जीवन की महान उपलब्धि है। उनके स्थान को रिक्त देखकर यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं लगती कि हमने एक उपयोगी साध्वी को खो दिया।

अनंत-अनंत कृतज्ञ हूँ परमपूज्य गुरुदेव और महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री जी के प्रति जिनकी कृपा से मुझे साध्वी चंद्रिकाश्री जी की सेवा का अवसर प्राप्त हुआ। इस दौरान जीवन का हर क्षण कितना महत्त्वपूर्ण होता है, इस सत्य को बहुत निकटता से देखने, समझने का अवसर मिला।

श्रद्धार्पण के साथ मंगलकामना करती हूँ कि वे शीघ्र ही उज्ज्वलतर से उज्ज्वलतम अवस्था को प्राप्त करें।

मुनि दर्शन कुमार जी के प्रति उद्गार

किया अपना आत्मोद्धार

● **मुनि कमल, मुनि अमन, मुनि नमि** ●

श्री तुलसी गुरुदेव से दीक्षा की स्वीकार।
महाश्रमण युग में किया अपना आत्मोद्धार।।

मेवाड़ी दर्शन मुनि कलाकार गुणवान
आचारवान गुरु भक्त थे विनयवान गण शान।।

सेवा कर गुरुदेव की एकम् निशि प्रस्थान
याद कर रहे लोग सब तत्त्वज्ञान व्याख्यान
मिलनसार मुनि की सदा स्मृति आती हरयाम
अमर हो गया संघ में दर्शन मुनि का नाम
अकस्मात संवाद सुन मन में हुआ विचार
कमल अमन नमि भावना प्राप्त करें भवपार।।

तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

रक्तदान शिविर

रायपुर।

तेयुप द्वारा डॉलफिन प्रिमियम प्लाजा व शिवनाथ ब्लड बैंक के सहयोग से रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें ८ व्यक्तियों ने रक्तदान कर इस महादान में अपनी सहभागिता दर्ज की। कार्यक्रम में विशेष श्रम शिविर प्रभारी ऋषभ बोथरा द्वारा किया गया। तेयुप से वीरेंद्र डागा, अर्पित गोखरू ने सहयोग किया। शिविर में आँखों के साथ ही विभिन्न प्रकार की जाँच निःशुल्क की गईं।

एबीलिटी इज एब्सोल्यूट

उधना।

अभातेयुप द्वारा निर्देशित तेयुप उधना के तत्त्वावधान में किशोर मंडल द्वारा नंदिनी दिव्यांग स्कूल में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया, उसमें एटीडीसी राष्ट्रीय प्रभारी एवं उपाध्यक्ष अर्पित नाहर, उपाध्यक्ष हेमंत डांगी, मंत्री गौतम आंचलिया, किशोर मंडल प्रभारी बसंत बैद एवं उत्कर्ष खाब्या, किशोर मंडल संयोजक प्रथम कोठारी सह-संयोजक हर्ष कोठारी एवं कुशल चंडालिया तथा किशोर मंडल की पूरी टीम इन सभी ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

अध्यक्ष मनीष दक ने सभी का स्वागत-अभिनंदन किया। म्यूजिकल जैम सेशन के द्वारा बच्चों का उत्साहवर्धन किया और बच्चों को उनके अंदर छिपे हुए टैलेंट को सराहा। वहाँ जाने से अत्यंत हर्ष की अनुभूति हुई। अभातेयुप का धन्यवाद आप इसी तरह के आयाम हमें संपादित करने के लिए प्रेरित करते रहें। परिषद एवं किशोर मंडल द्वारा इस कार्यक्रम में नंदिनी दिव्यांग स्कूल में जो आवश्यक वस्तु थी उसे उपलब्ध कराई गई।

उपाध्यक्ष हेमंत डांगी ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में उत्कर्ष खाब्या का विशेष श्रम प्रदान हुआ।

राशन सामग्री का वितरण

राजाराजेश्वरी नगर।

तेयुप द्वारा सुकांशा चैरिटेबल ट्रस्ट मागड़ी मैन रोड में निवासित लोगों को नाश्ता करवाया एवं राशन सामग्री का वितरण किया। इस सेवा कार्य के प्रायोजक हनुमानमल संजय कुमार बैद परिवार थे। कार्यक्रम का शुभारंभ सामुहिक नमस्कार महामंत्र के साथ किया। तेयुप अध्यक्ष सुशील भंसाली ने उपस्थित प्रायोजक परिवार सहित इस अवसर पर उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत किया।

सेवा-सहप्रभारी सुपार्श पटावरी ने बताया कि इन्हें राशन सामग्री की आवश्यकता थी, जो कि परिषद द्वारा उपलब्ध करवाया गया। इस अवसर पर कई पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही। मंत्री विकास छाजेड़ ने सभी युवकों का आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन सेवा कार्य सहप्रभारी सुपार्श पटावरी ने किया।

७१ दिन ७१ रक्तदान शिविर का आगाज

विजयनगर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्त्वावधान में तेयुप, विजयनगर द्वारा कर्नाटक सरकार के संयुक्त तत्त्वावधान में डिस्ट्रिक्ट हेल्थ एवं फेमिली वेलफेयर डिपार्टमेंट एवं कर्नाटका एड्स प्रिवेंशन सोसायटी कर्नाटक सरकार के साथ मिलकर दिनांक ६-१२-२१ से १४-२-२०२२ तक ७१ दिन ७१ रक्तदान शिविर का आयोजन ब्लड ऑन व्हील का शुभारंभ विजयनगर स्थित तेरापंथ भवन से जैन संस्कार विधि द्वारा हुआ।

सर्वप्रथम जैन संस्कार विधि के संस्कारक धीरज भदानी, श्रेयांश गोलछा, विकास बांठिया एवं बसंत डागा ने मंत्रोच्चार एवं संपूर्ण विधि-विधान से कार्यक्रम की शुरुआत की। तत्पश्चात परिषद अध्यक्ष अमित दक ने उपस्थित सभी महानुभावों का स्वागत करते हुए रक्तदान की महता को बताया एवं कहा कि रक्तदान से बड़ा दान नहीं हो सकता।

तेयुप, विजयनगर के इस आयोजन में डिस्ट्रिक्ट हेल्थ एवं फेमिली वेलफेयर डिपार्टमेंट एवं कर्नाटक एड्स प्रिवेंशन सोसायटी कर्नाटक सरकार के साथ एवं लाइयंज़ ब्लड बैंक अत्तिकूपे एवं विवेकानंदा ब्लड बैंक के सहयोग से जरूरतमंदों के लिए कर रही है। रक्तदान संयोजक करण मांडोत एवं विनीत गांधी ने श्रम किया उनके प्रति मंगलकामना।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि विमल कटारिया, पूर्व अध्यक्ष एवं परामर्शक अभातेयुप ने अपनी भावना प्रकट करते हुए कहा कि तेयुप, विजयनगर ने आज एक नव इतिहास की नींव रखी है और मानव सेवा का बहुत उच्चकोटि का कार्य प्रारंभ किया है।

डॉ० श्रीनिवास डिस्ट्रिक्ट हेल्थ एवं फेमिली वेलफेयर डिपार्टमेंट ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि तेयुप, विजयनगर विगत कई वर्षों से रक्तदान के क्षेत्र में कार्य कर रही है एवं सरकार के साथ मिलकर कार्य को संपादित करने का जो कदम है वो सराहनीय है, परिषद के प्रति मंगलकामना करता हूँ कि आप आगे भी ऐसे ही सेवा के कार्य करते रहें।

डॉ० महेश कुमार जिला एड्स नियंत्रण अधिकारी, कर्नाटक सरकार ने भी अपने विचार व्यक्त किए एवं मंगलकामना प्रकट की। इस अवसर पर लाइयंज़ ब्लड बैंक एवं विवेकानंदा ब्लड बैंक से मनोज कुमार, रेड्डी सर, रामकृष्णा, सुरेश एवं परिषद से पूर्व अध्यक्ष महेंद्र टेबा, अभिषेक कावड़िया, उपाध्यक्ष मनोज बरड़िया, प्रवीण गन्ना, कोषाध्यक्ष राकेश पोखरणा, कार्यसमिति सदस्य रतन बरड़िया आदि उपस्थित रहे।

अंत में सभी अतिथियों का सम्मान किया गया एवं आभार मंत्री विकास बांठिया ने किया।

अमृत वर्ष के उपलक्ष्य में संकल्पों की अभिवंदना

राजाराजेश्वरी नगर।

अभातेममं द्वारा निर्देशित (५१ दिन ५१ संकल्प) एवं उसी लक्ष्य में शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी की प्रेरणा से तेरापंथ महिला मंडल राजाराजेश्वरी नगर द्वारा तेरापंथ भवन में प्रमुखाश्री जी के अमृत मनोनयन वर्ष (५१ दिन ५१ संकल्प) संकल्प पत्र को बहनों में वितरण किया गया। अध्यक्ष लता बाफना ने सभी बहनों को ज्यादा-से-ज्यादा संकल्प स्वीकार करने के लिए प्रेरित किया एवं अपार्टमेंटों में भी अन्य बहनों द्वारा संकल्प स्वीकार करवाने हेतु लगभग १५१ संकल्प पत्र वितरण करवाए।

संकल्प के शुभारंभ दिवस पर अच्छी संख्या में भाई-बहनों ने सामायिक कर श्रद्धासिक्त अभिवंदना समर्पित की। संरक्षिका बहनें—गुलाब बाई छाजेड़, सुशीला बाई छाजेड़, उपाध्यक्ष शोभा बोथरा, सहमंत्री हेमलता सुराणा, कन्या मंडल प्रभारी सुधा दुगड़, कन्या मंडल, सह-संयोजिका आर्या संचेती आदि बहनें उपस्थित रहीं।

मन की एकाग्रता के लिए तन की स्थिरता भी अपेक्षित : आचार्यश्री महाश्रमण

पापड़ी, ८ दिसंबर, २०२१

तेरापंथ धर्मसंघ के अधिनायक महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी १५ किलोमीटर प्रलंब विहार कर पापड़ी स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के प्रांगण में पधारे।

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण जी ने उपस्थित जन समुदाय को अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि ध्यान के चार प्रकार बताए गए हैं—आर्त-ध्यान, रौद्र-ध्यान, धर्म-ध्यान और शुक्ल-ध्यान। ध्यान शब्द काफी प्रसिद्ध है। विभिन्न ध्यान पद्धतियाँ दुनिया में उपलब्ध होती हैं।

ध्यान अध्यात्म-साधना का एक अंग है। ध्यान की परिभाषा है—एक आलंबन पर मन को केंद्रित कर देना अथवा मन, वचन, काय की प्रवृत्ति को रोक लेना ध्यान हो जाता है। ध्यान अशुभ भी होता है और शुभ भी होता है। मन की एकाग्रता ध्यान है। तो मन की एकाग्रता राग-द्वेष युक्त भी हो सकती है। मन की एकाग्रता राग-द्वेष मुक्त भी हो सकती है। राग-द्वेष युक्त एकाग्रता अशुभ ध्यान है। राग-द्वेष मुक्त एकाग्रता आध्यात्मिकता युक्त है, वह शुभ ध्यान हो जाता है।

निरोध संपूर्णतया तो बार-बार नहीं होता है। अनंत काल में संभवतः एक बार होता है। शैलेषी अवस्था होती है, अप्रकंप अवस्था होती है, उस समय न शरीर की चंचलता, न वाणी का प्रयोग और न ही मन की चंचलता होती है। वह संपूर्णतया योग-निरोध की अवस्था होती है। जिसे अयोग संवर भी कहा जाता है। अयोग अवस्था एक विचित्र अवस्था है, मानो जीवन भी है और जीवन होते हुए भी अजीवन जैसी स्थिति प्रतीत हो रही है।

आर्त ध्यान और रौद्र-ध्यान में राग-द्वेष है, अंताप है, इसलिए दोनों ही अशुभ ध्यान हैं। धर्म और शुक्ल-ध्यान शुभध्यान होते हैं। प्रेक्षाध्यान का अर्थ भी यही है कि प्रियता और अप्रियता से मुक्त हो देखना। गहराई से विशेष रूप से देखना। एकाग्रता का अपना महत्त्व है। मन की एकाग्रता के लिए तन की स्थिरता भी सहयोगी बनती है। शरीर स्थिर व वाणी का अप्रयोग रहता है, फिर मन की एकाग्रता को साधना भी कुछ आसान हो सकता है।

दो शब्द हैं—व्यग्र और एकाग्र। जब मन विविध आलंबनों पर जाता है, तो वह व्यग्र मन होता है। मन जब एक जगह केंद्रित हो जाता है, वह एकाग्र मन हो जाता है। दीर्घ श्वास के प्रयोग से मन एकाग्र हो सकता है। सुबह-सुबह एक सामायिक हो जाए। सामायिक में धार्मिक साधना चले। मन इधर-उधर न भटके, यह एक प्रसंग से समझाया कि मन को चंचल न बनाएँ, धार्मिक प्रवृत्ति में लगाए रखें, यह काम्य है।

पूज्यप्रवर ने स्थानीय लोगों को अहिंसा यात्रा के तीन सूत्रों को विस्तार से समझाया। तीनों संकल्पों को समझाकर स्वीकार करवाए।

पूज्यप्रवर मध्याह्न लगभग तीन बजे विहार कर लाखेरी गाँव में पधारकर वहीं पर रात्रि प्रवास किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

✦ *व्यक्ति दूसरों को देखता है, दूसरों को जानने का प्रयास करता है। आवश्यकतानुसार ऐसा करना अपेक्षित भी होता है, किंतु उसे स्वयं को देखना नहीं भूलना चाहिए।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
20 - 26 दिसंबर, 2021

✦ *प्रियता और अप्रियता से मुक्त होकर स्वयं को देखने वाला व्यक्ति सत्य का साक्षात्कार कर सकता है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

संस्कार युक्त शिक्षा से अच्छी पीढ़ी का निर्माण हो सकता है : आचार्यश्री महाश्रमण

इंद्रगढ़, ६ दिसंबर, २०२१

अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमण जी लाखेरी से ११ किलोमीटर विहार का इंद्रगढ़ स्थित राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय पधारे। इंद्रगढ़ का तेरापंथ से भी संबंध जुड़ा है। मुनि हेमराज जी, मुनि जीतमल जी के जीवन से इंद्रगढ़ के प्रसंग जुड़े हैं। मुनि जीतमल जी का प्रथम चातुर्मास इंद्रगढ़ में हुआ था। बाद में मुनि जीतमलजी तेरापंथ के अधिशास्ता बन गए थे।

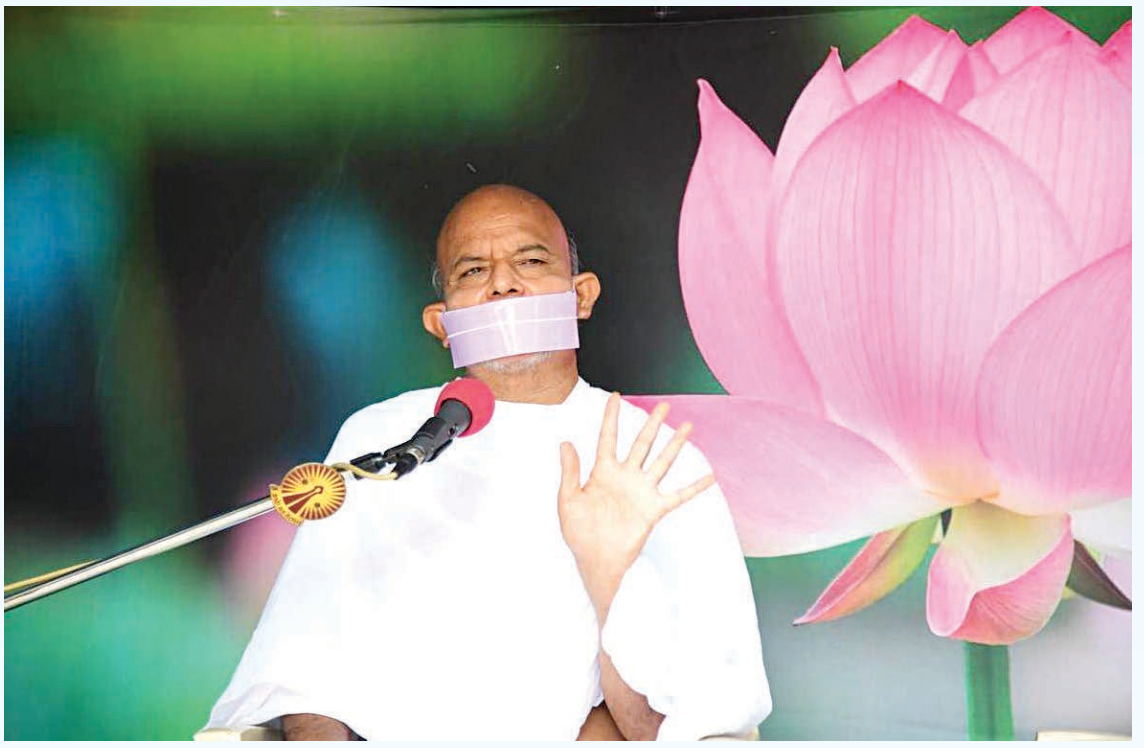

तेरापंथ के एकादशम इंद्र आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि हम सब इंसान हैं, मानव हैं। मानव जन्म को दुर्लभ बताया गया है। यह हमारी आत्मा भाग्य के योग से मनुष्य जन्म को प्राप्त करती है। मनुष्य जन्म तो मिल गया, अब इस मनुष्य जन्म को कैसे सार्थक, सफल, सुफल बनाया जाए।

कोई भी प्राणी एक दिन जन्म लेता है, जीवन जी कर अवसान को प्राप्त हो जाता है। आदमी एक विशेष प्राणी है, आदमी को विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए कि मेरा जीवन कैसे सार्थक हो। कई मनुष्य महात्मा-साधु बन जाते हैं। गृहस्थ में भी जीते हैं। पर पुण्योदय से साधु बन जाते हैं। हमारे धर्मसंघ में कितने-कितने साधु हुए हैं। उनमें से कई आचार्य भी बन जाते हैं।

हमारे प्रथम आचार्य परम पावन आचार्य भिक्षु थे। चौथे आचार्य जयाचार्य हुए हैं। वे बालावस्था में ही साधु बन गए थे। पूरा परिवार दीक्षित हो गया था। वे प्रज्ञा-पुरुष जयाचार्य के नाम से प्रसिद्ध हुए थे। उनकी बड़ी दीक्षा इंद्रगढ़ में हुई थी। उनका भारमल जी स्वामी से गुरु-शिष्य का संबंध हो गया था। पूज्य रायचंदजी स्वामी से उनके दो संबंध थे। एक तो वे दीक्षा-दाता थे। दूसरा संबंध उत्तराधिकार प्रदाता भी थे।

ये घटना लगभग २०८ वर्ष पुरानी इंद्रगढ़ की है। जयाचार्य एक विशेष ज्ञानी आचार्य थे। जयाचार्य के बाल मुनि के समय की नाटक वाली घटना को समझाया। हमारे बाल मुनि जयाचार्य की तुलना कर सके अच्छी बात है, उनके जीवन से एकाग्रता की शिक्षा लें। मुनि जीतमल जी न्यारा में खूब विचरे थे। मुनि हेमराज जी के आचार्यश्री भारमल जी के दर्शन करने का प्रसंग समझाया कि अगवानी, लौखानी का कैसा संबंध थे। मुनि हेमराज जी के सिंघाड़े में १२ वर्ष रहे थे।

जयाचार्य महान साहित्यकार बन गए। भगवती की जोड़ राजस्थानी भाषा का विशाल पद्यात्मक ग्रंथ है। वे तत्त्ववेत्ता-ज्ञानपुंज आचार्य थे। विद्या-शिक्षा के क्षेत्र में वे खूब आगे बढ़े थे। भारत में कितने विद्यालय हैं। विद्यालयों में आधुनिक विद्या के साथ कुछ अध्यात्म विद्या, जीवन विज्ञान का भी प्रशिक्षण दिया जाता रहे ताकि शिक्षा के साथ अच्छे संस्कार आ जाएँ।

शिक्षक तो एक निर्माता होता है। ज्ञान के साथ अच्छे संस्कारों का निर्माण करने का भी प्रयास होता रहे। संस्कार युक्त शिक्षा से अच्छी पीढ़ी का निर्माण हो सकता है। विद्यार्थी अच्छा नागरिक बनकर रहे, यह एक घटना से समझाया कि बालक कुसंस्कारों में न जाएँ। मैं श्रीमद् जयाचार्य का ध्यान करता हूँ।

पूज्य आचार्यश्री भारमल जी का यह २००वाँ महाप्रयाण वर्ष है। उनसे जुड़ा यह क्षेत्र है। मैं आचार्यश्री भारमल जी को भी अभिनंदन-अभिवादन करता हूँ। पूज्यप्रवर ने शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं स्थानीय लोगों को अहिंसा यात्रा के सूत्रों को समझाया, उन्हें स्वीकार करवाए।

पूज्यप्रवर के स्वागत में स्थानकवासी समाज, पारसमल जैन, महावीर हरकारा, (दिगंबर जैन समाज), सुरेंद्र हरकारा, सुनीता जैन, राकेश जैन ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि गुरुदेव के प्रवचन से हमारा जीवन बदल सकता है।

अहिंसा यात्रा : चित्रमय झलकियाँ

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **संदीप कोठारी** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**